सत्यमेव जयते

अवध गरिमा

13वां अंक

अगस्त 2022

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
फ़ैज़ाबाद

संयोजक
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फ़ैज़ाबाद की 14 वीं अर्द्ध–वार्षिक बैठक

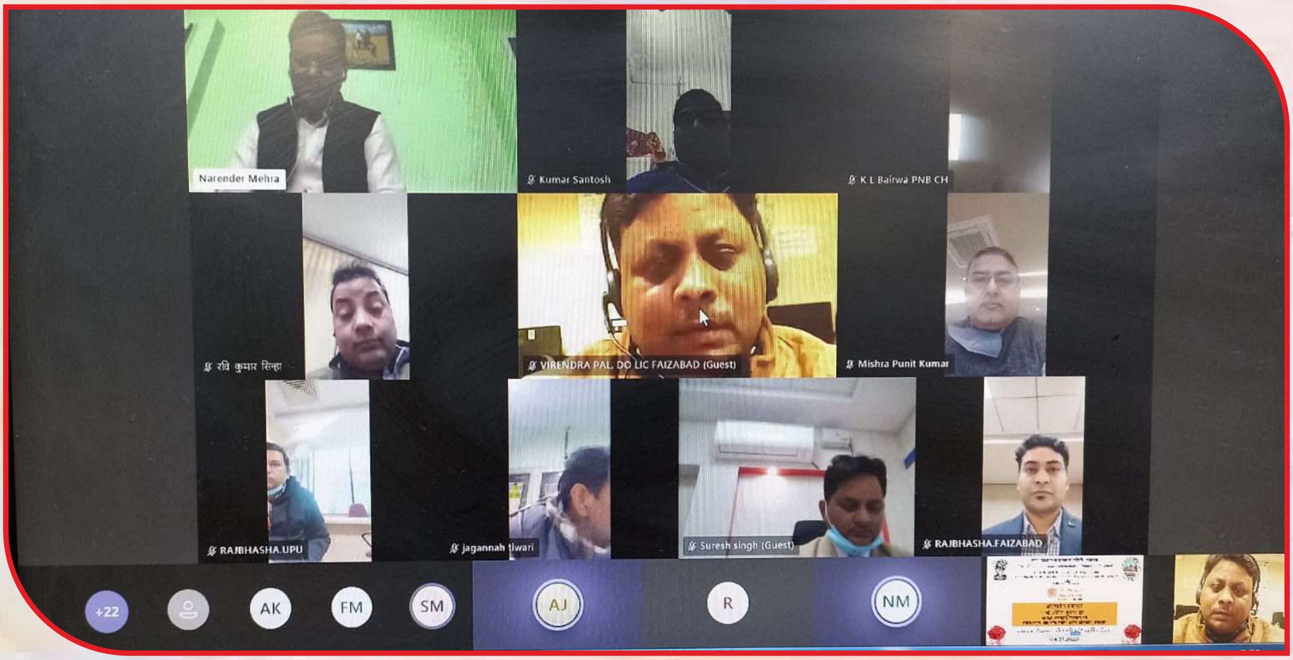

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फ़ैज़ाबाद की 14 वीं अर्द्ध–वार्षिक बैठक का आयोजन दिनांक 24 जनवरी, 2022 को माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से ऑनलाइन किया गया। श्री अनिल कुमार झा, अध्यक्ष, नराकास, फ़ैज़ाबाद की अध्यक्षता में इस बैठक का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–2, गृह मंत्रालय से सहायक निदेशक श्री नरेंद्र सिंह मेहरा जी ने समिति का मार्गदर्शन किया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेंद्र मिश्रा जी, समंवयक– हिंदी भाषा एवं प्रयोजनमूलक विभाग, डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय; विशिष्ट अतिथि के रूप में बैंक ऑफ़ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय से श्री पुनीत कुमार मिश्रा जी, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा); अंचल कार्यालय, लखनऊ से श्री मोहम्मद इरशाद जी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) बैठक में उपस्थित रहे। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या से प्रबंधक (राजभाषा) श्री सुरेंद्र सिंह यादव जी ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन संपन्न किया। विभिन्न सदस्य संस्थानों के कार्यालय प्रमुख/उच्चाधिकारी गण एवं राजभाषा प्रभारी भी बैठक में उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान नराकास, फ़ैज़ाबाद की छमाही पत्रिका **'अवध गरिमा'** के 12वें अंक का ई–विमोचन किया गया।

बैठक का संचालन श्री नीरज कुमार सिंह, सदस्य सचिव, नराकास, फ़ैज़ाबाद द्वारा किया गया।

अवध गरिमा

अगस्त 2022

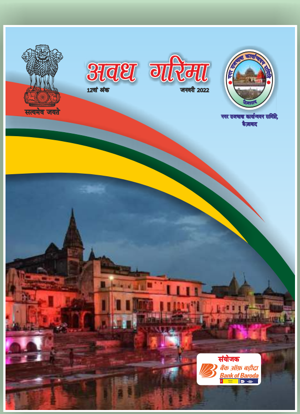

अवध गरिमा का 12वां अंक

संरक्षक : अनिल कुमार झा
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फ़ैज़ाबाद एवं क्षेत्रीय प्रमुख, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

संपादक : नीरज कुमार सिंह
सदस्य सचिव, नराकास, फ़ैज़ाबाद एवं प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

संपादन मंडल :

मयंक तिवारी, पी.जी.टी. हिंदी, जवाहर नवोदय विद्यालय
संजयधर द्विवेदी, कार्यक्रम अधिशासी, आकाशवाणी
रजत कुमार, पी. जी. टी, हिंदी, केंद्रीय विद्यालय
सुरेन्द्र यादव, प्रबंधक (राजभाषा), सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया

संपर्क : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फ़ैज़ाबाद, बड़ौदा भवन, साकेतपुरी आवासीय योजना, देवकाली बाईपास, पोस्ट अयोध्या, जिला अयोध्या – 224123 ईमेल : rajbhasha.faizabad@bankofbaroda.co.in

अनुक्रमणिका

इस अंक में...

- सहायक निदेशक महोदय का संदेश... 2
- अध्यक्ष महोदय का संदेश..... 3
- सदस्य सचिव की कलम से.... 4
- अमित प्यार 5
- संघर्ष 6
- हिंदी 7
- नहीं मिली 8
- दूरसंचार एवं इंटरनेट का आज के जीवन पर प्रभाव 9
- विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिन्दी 10–16
- पथिक 17
- माँ 18
- भाषा 19
- गैर– निष्पादित आस्तियों की बढ़ती चुनौतियाँ 21
- जन कल्याणकारी योजनाओं की सफलता में भारतीय भाषाओं की भूमिका ... 23
- आइए मणिपुर चलें 25
- हरिवंशराय बच्चन 28
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फ़ैज़ाबाद – सदस्य कार्यालयों की सूची ... 35

संयोजक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

पत्रिका में छपे आलेख रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। समिति का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र–2),
302, सी.जी.ओ.भवन–1, कमला नेहरू नगर,
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) –201002
दूरभाष/फैक्स–0120–2719356
ई–मेल–rionorthgzb@gmail.com

फा.सं.–क्षे.का.का.उ./पत्रिका–संदेश/241 दिनांक – 24/08/2022

संदेश...

अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु निरंतर सराहनीय प्रयास कर रही है। इसी क्रम में नराकास, फैजाबाद अपनी छमाही पत्रिका ''अवध गरिमा'' के 13वें अंक का प्रकाशन करने जा रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि ''अवध गरिमा'' का यह अंक भी संग्रहणीय होने के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(श्री निर्मल कुमार दुबे)
सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष

अध्यक्ष महोदय का संदेश.....

प्रिय साथियो,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद की छमाही पत्रिका 'अवध गरिमा' के माध्यम से आपसे संवाद करना हमेशा ही एक सुखद अनुभव होता है। नराकास के सदस्यों एवं पत्रिका के सुधी पाठकों तक अपनी बात पहुँचाने का 'अवध गरिमा' एक सशक्त माध्यम है, जिससे फैज़ाबाद स्थित कार्यालयों, विद्यालयों, शाखाओं एवं संस्थानों में आयोजित होने वाली गतिविधियों को आप सभी तक पहुंचाने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। इसी क्रम में 'अवध गरिमा' का 13वां अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

'अवध गरिमा' का यह अंक भी समिति के सदस्यों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के प्रकाशन के साथ–साथ सदस्यों द्वारा अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त किये गये विचारों एवं भावनाओं का संग्रह है।

'अवध गरिमा' का प्रकाशन हमारी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। पत्रिकाएं भावनाओं एवं विचारों के संग्रह के साथ–साथ नई चेतना का भी संचार करती है। साथ ही, स्टॉफ सदस्यों को अपने अंदर छुपी हुई प्रतिभा के विस्तार हेतु एक समुचित मंच भी प्रदान करती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी परस्पर सहयोग और एक सुनियोजित योजना के तहत कार्य करते हुए राजभाषा हिंदी के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान आगे भी देते रहेंगे।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं !

(अनिल कुमार झा)
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद
एवं क्षेत्रीय प्रमुख, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

सदस्य सचिव की कलम से..........

प्रिय साथियो,

अपनी भाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन बहुत ही सहज और स्वाभाविक होता है। हिंदी ने सभी भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोकर सदैव अनेकता में एकता की भावना को पुष्ट किया है। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता व सुबोधता है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है वहीं लिखा जाता है।

अवध गरिमा के इस 13वें अंक में हमने नराकास, फैज़ाबाद के सदस्य कार्यालयों में आयोजित कार्यक्रमों/गतिविधियों की झलकियों के प्रकाशन के साथ–साथ सदस्य कार्यालयों के स्टॉफ सदस्यों द्वारा रचित आलेख, कविताओं, कहानियों आदि का संकलन किया है। हम आशा करते हैं कि इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं आपको पसंद आएंगी।

अवध गरिमा के अनवरत सफल प्रकाशन के लिये हमें आपकी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों की आवश्यकता है, इससे हमारा उत्साहवर्धन होता है। अत: पत्रिका के सभी पाठकगणों से हमारा सादर अनुरोध है कि पत्रिका को प्रभावशाली और आकर्षक बनाने हेतु हमें अपने अनमोल विचार / सुझाव प्रेषित कर हमारा उत्साहवर्धन करते रहें।

शुभकामनाओं सहित !

(नीरज कुमार सिंह)
सदस्य सचिव,
नराकास, फैज़ाबाद
एवं प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

अमिट प्यार

रतन कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

जगमगाते हैं असंख्य तारे,
निर्मल आकाश में;
टिमटिमाते है एक तारे,
नयनों के सुराख में !

ऐ तारे! तू चमक
ढक के बादल के छावों में;
कर प्रकाशित जग को,
आजा मेरी बाहों में!

स्निग्ध क्रोड़ाबद्ध हो,
क्षितराओ कोमल प्रेम;
तू अपनी मुस्कानों से,
सींच दे वातसल्य प्रेम!

कोमल अधर फलका,
फरमा दे मातृत्व गान;
अपनी मादक सौंदर्य से,
हर ले सबका ध्यान!

सब कहे कुलसौरभ तुम्हें,
तू तो कुलगौरव है;
मातृ छांव में पला,
तू भारत भू का रौनक है!

तेरी रौनकता निखरती रहे,
यही है मेरा अरमान!
तेरी प्रतिभा से हिन्द पाए
नित्य नूतन सम्मान!

संघर्ष

जगन्नाथ तिवारी
हिंदी अनुवादक
भारत संचार निगम लिमिटेड
कार्यालय–महाप्रबंधक दूरसंचार, अयोध्या

आज के आधुनिक परिवेश में मानव जीवन इतना संघर्षमय हो गया है कि मानवता ही दम तोड़ रही है। लोग इतना संघर्षमय जीवन–यापन कर रहे हैं कि अपनों का कुशल–क्षेम पूछने या जानने में महीनों / वर्षों लग जाते हैं। यदि किसी को अपनों या अमुक व्यक्ति से काम न हो तो कोई कुशल–क्षेम पूछने में भी समर्थ नहीं है।

आज के कलिकाल में कोई मानवता हेतु संघर्ष कर रहा है तो कोई दानवता हेतु संघर्ष कर रहा है। संघर्ष ही जीवन है, ऐसी कहावत है। मानव किस उद्देश्य हेतु संघर्ष कर रहा है, ऐसा हम लोग ही जानते हैं यानि मानव योनि ही संघर्ष हेतु बनी है। वैसे तो आजकल जानवर भी अपना भोजन जुटाने या जीने हेतु संघर्ष कर रहे हैं।

जैसा कि प्रकृति में उपस्थित समस्त जड़ चेतन इस प्रकृति के पूरक हैं। आज का वह समय है जिसमें प्रकृति भी संघर्ष कर रही है, जिसके कारण समय–समय पर आपदाएं आ रही हैं। जीवन का सार ही संघर्ष है, ऐसा मुझे/आमजन को प्रतीत होता है। कोई अपनों को अपनाने और कोई अपनों से बिछुड़ने हेतु संघर्ष कर रहा है। संघर्ष कैसा है, हम और आप ही अनुभव कर सकते हैं।

**जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ
तुम स्वत्त्व सुधा रस पान करो
उठके अमरत्व विधान करो
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो न निराश करो मन को।**

– मैथिलीशरण गुप्त

हिंदी

अतुल कुमार सिंह
अधिकारी (क्रेडिट)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

क ख ग अब भूल गए
बस ए बी सी डी आती है

ककहरा का ज्ञान नहीं
भाषा अंग्रेजी भाती है

बारहखड़ी के नाम पर
बड़े–बड़े भी घबराते हैं

हिंदी के वर्णक्रम तो जैसे
स्वयं ही बिखरे जाते हैं

अगाध गर्त है जीवन यदि
निजभाषा तज मतिमंद बनें

हे हिंदी के आराधक गण
आओ हिंदी के छंद बनें

हे भारत के युवा रुधिर!
बन हिंदी के तिमिरारि सुनो

दृढ़ संकल्पित हो भारत–वासी
हिंदी वर्णों की मुक्तामाल बुनो

शिरोबिंदु पर स्थापित हो
हिंदी सर्वत्र दीप्तिमान रहे

रहे सुशोभित हर जिह्वा पर
भारत का जयगान कहे।

नहीं मिली

ले. कं. शैलेंद्र यादव
वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

रोटी के वसीले को ही रोटी नहीं मिली ।
गुलशन को खुसबू –ए– गुल नहीं मिली ॥
खाक हो गया घर रोशन करने वाला चराग ।
रौनको में इसे हिस्सेदारी नहीं मिली ॥

कभी बाढ़ आ गयी कभी ओले पड़ गए ।
उड़ गया भूसा, कभी आलू सड़ गए ॥
कुदरत की सारी तपिश उसी के भाग में है ।
मुसीबतों से उसे कभी राहत नहीं मिली ॥

धरती से उगाया सोना लेकर बाज़ार पहुंचा ।
उस सोने की भी उसे कीमत नहीं मिली ॥
सब ने मान लिया उसकी किस्मत में रोना है ।
हालात बदलें, किसी में वो नीयत नही मिली ॥

कफ़स ए कर्ज़ में फड़फड़ाता रहा वो उम्र भर ।
ज़िल्लत से, घुटन से, उसे आज़ादी नहीं मिली॥
जब सीचना था फसल को तो पानी नहीं मिला ।
ज़रूरत थी खेत को तो वक़्त पे खादी नहीं मिली ॥

बैल की चिंता तो कभी बीज की चिंता ।
मनाएँ कैसे त्योहार और तीज की चिंता ॥
खोने को नहीं था ऐसा पास उसके कुछ ।
फिर भी चिंताओं से उसे फुर्सत नहीं मिली ॥

दूरसंचार एवं इंटरनेट का आज के जीवन पर प्रभाव

विपिन कुमार पाठक
उप मण्डल अभियन्ता
भारत संचार निगम लिमिटेड
कार्यालय–महाप्रबंधक दूरसंचार, अयोध्या

दूरसंचार एवं इंटरनेट आज के जीवन एवं चाल–चलन में इस प्रकार प्रवेश कर चुका है जैसे कि शरीर की नसों में रक्त। जैसे बिना रक्त के शरीर का चलना मुश्किल है उसी प्रकार बिना दूरसंचार व्यवस्था एवं इंटरनेट के आज का जीवन यापन एवं कार्यों का निर्वहन करना भी अत्यंत कठिन है। इसे आज के युग का एक अति महत्वपूर्ण अविष्कार एवं चमत्कार माना जा सकता है। देश की संचार व्यवस्था जितनी ही मजबूत एवं सुरक्षित है, वह देश आज के समय में उतना ही सुरक्षित है। किसी देश की संचार व्यवस्था को नष्ट करना, उस देश की अर्थव्यवस्था को नष्ट करने के बराबर है। इसी संचार व्यवस्था ने पूरे विश्व को बहुत छोटा कर दिया है। इस समय कोई भी कहीं भी हो, देखा एवं बात किया जा सकता है। इतना ही नहीं, उसे चिन्हित करके उसको फायदा एवं नुकसान, दोनों ही पहुँचाया जा सकता है। इसलिये इस चमत्कारिक अविष्कार का उपयोग समस्त जनों को बहुत सोच–समझ कर प्राणि–मात्र के हित में करना चाहिये।

*****

वर्ष 1929 ई. में सुभाषचंद्र बोस ने कहा, "प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती । अपनी प्रान्तीय भाषाओं की भरपूर उन्नति कीजिए, उसमें कोई बाधा नहीं डालना चाहता और न हम किसी की बाधा को सहन ही कर सकते हैं । पर सारे प्रान्तों की सार्वजनिक भाषा का पद हिंदी या हिंदुस्तानी को ही मिला है ।"

नराकास, फ़ैज़ाबाद के तत्वावधान में पंजाब नैशनल बैंक, मण्डल कार्यालय, अयोध्या द्वारा आयोजित 'हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता' : पुरस्कृत निबंध

विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिन्दी

(प्रथम पुरस्कार)

तन्मय श्रीवास्तव
प्रबंधक (आई.टी.)
पंजाब नैशनल बैंक
मण्डल कार्यालय, अयोध्या

भाषा किसी भी देश की सांस्कृतिक विरासत की मुख्य संवाहक होती है। यह तथ्य सर्वविदित है कि भारतवर्ष हर प्रकार की विविधताओं का देश है जिनमें भाषाई समृद्धि भी शामिल है। यहाँ अनेकों बोलियों एवं उपभाषाओं के साथ साथ कई भाषाएँ भी प्रचलित हैं। इतनी विविधताओं के बावजूद भी यहाँ हर भाषा अपने आप में साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध एवं विकसित है। इस बात में कोई संशय नहीं कि भारत कि इन सभी भाषाओं को एक सूत्र में पिरोने में सक्षम केवल और केवल हिन्दी ही है।

विविधताओं को जोड़ती हिन्दी –

"विविधता में एकता, यही है भारत की विशेषता"। यह पंक्ति प्राचीन काल से ही भारत के लिए एकदम सटीक रही है। हमेशा से ही इन विविधताओं को जोड़ने का कोई न कोई माध्यम भी विद्यमान रहा है। भाषाओं के संदर्भ में यदि बात की जाए तो हिन्दी सरलतम भाषाओं में से है और सबसे महत्वपूर्ण भी। इसमें अन्य भाषाओं के शब्दों को अपना लेने की अद्भुत क्षमता विद्यमान है, इसलिए यह सर्वग्राह्य है। इसका उदाहरण आप रोज़मर्रा की हिन्दी में प्रयोग होने वाले अनेकों उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के शब्दों से लगा सकते हैं जिनके बिना एक हद तक हिन्दी में वार्तालाप करना भी मुश्किल प्रतीत होगा। हिन्दी के इसी महत्व को दर्शाते हुए नोबल पुरस्कार विजेता कवि रविन्द्रनाथ टैगोर जी ने कहा था,

"भारतीय भाषाएं नदियां हैं परन्तु हिन्दी महानदी है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि हिन्दी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता है।'

देश में विद्वानों, कवियों और लेखकों ने हिन्दी में अद्वितीय रचनाएं प्रस्तुत की हैं, साथ ही हिन्दी में प्रकाशित विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार और आम जनता को आपस में जोड़ने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज़ादी की लड़ाई में क्रांतिकारियों ने अपने विचारों को लोगों तक पहुंचाने के लिए हिन्दी भाषा का ही सहारा लिया था। इनमे किसी क्षेत्र विशेष नहीं बल्कि बंगाल, महाराष्ट्र एवं देश के अन्य भागों के प्रकाशन भी शामिल थे। आज के समय में हिन्दी की प्रसिद्धि बढ़ाने में बॉलीवुड की फिल्मों का योगदान नकारा नहीं जा सकता है। देश के साथ विदेशों में भी हिन्दी फिल्में और गाने भारी संख्या में देखे और सराहे जाते हैं।

हिन्दी : विश्व भाषा बनने का सफर –

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था और तब से इस दिन को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिन्दी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था,

"हिन्दी के बिना राष्ट्र गूंगा है। भाषायी संकीर्णता कभी भी हमारे व्यवहार और विचारों की अभिव्यक्ति में बाधक नहीं होनी चाहिए।"

अपनी सहजता, सुगमता एवं सुबोधता के कारण आज हिन्दी "विश्व भाषा" बनने की ओर अग्रसर है। अगर

उदाहरणों पर गौर करें तो विदशों में आज "इंडिया स्टडी सेंटर" स्थापित हैं जहाँ देश के नागरिक हिन्दी से परिचित होकर भारत से और अच्छे से जुड़ सकें। गत कुछ समय में माननीय प्रधानमंत्री जी की विदेश यात्राओं के दौरान प्रवासी भारतीयों के सम्मेलनों में हिन्दी की भव्यता, उपयोगिता एवं प्रयोग बढ़–चढ़ कर देखने को मिल रहा है।

जगजाहिर है कि हिन्दी आज महज संवाद का माध्यम भर नहीं रह गई है बल्कि यह हमारी पहचान बन चुकी है। बदलती तकनीकी, कम्प्यूटर एवं स्मार्ट फोन के इस युग में अधिकांश एप्लिकेशन हिन्दी में उपलब्ध भी हैं और काफी प्रचलित भी। यूनिकोड, वॉइस टाइपिंग के माध्यम से हिन्दी में लिखना भी एकदम सरल हो चुका है। लिखित परीक्षाओं को हिन्दी में देने के विकल्प के साथ–साथ आज भारत में लगभग सभी नौकरियों में साक्षात्कार भी हिन्दी भाषा में देने का प्रचलन है। सत्य ही है,

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय के सूल'

वैश्विक स्तर पर भारत के बढ़ते आर्थिक, सामरिक, राजनैतिक प्रभाव को देखते हुए, भारत की राजभाषा हिंदी को सीखने, जानने की ललक विदेशों में बढ़ती जा रही है। इसी क्रम में 17 सितंबर, 2001 को भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना मॉरिशस में की गयी। हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने के प्रयासों में इस सचिवालय की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है।

हिन्दी : अध्ययन एवं अध्यापन –

वर्तमान में दैनिक समाचारपत्रों की दृष्टि से विश्व के प्रथम बीस समाचारपत्रों में हिन्दी के पाँच समाचारपत्रों का समावेश है जिनमें दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, प्रमुख हैं। दुनिया के लगभग 170 देशों में किसी न किसी रूप में हिंदी पढ़ाई जाती है। मॉस्को (रुस) को दुनिया में हिंदी भाषा के अध्ययन–अध्यापन के प्रमुख केंद्रों में से एक माना जाता है। रूस स्थित भारतीय दूतावास के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी भाषा निःशुल्क पढ़ाई जाती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में हार्वर्ड, येल, शिकागो, वाशिंगटन, मोन्टाना, टेक्सास एवं कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालयों समेत कई अन्य विश्वविद्यालयों में भी हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इसी प्रकार ऑस्ट्रेलियन नेशनल विश्वविद्यालय, टोक्यो विश्वविद्यालय, जॉन हॉपकिंस विश्वविद्यालय में भी हिंदी के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। विदेशों के साथ साथ भारत में भी दिल्ली, आगरा, वाराणसी और अन्य विश्वविद्यालयों में कई विदेशी छात्र हिन्दी भाषा की पढ़ाई कर रहे हैं।

उपसंहार –

अनेक उल्लेखनीय प्रयासों के बावजूद हिंदी को विश्व भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए कुछ और प्रयास करने की आवश्यकता है। किसी भी भाषा के संरक्षण हेतु उस भाषा में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा का उपलब्ध होना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

आज सबसे महत्वपूर्ण यह है कि देश की सारी भारतीय भाषाएँ एवं भाषाई एक–दूसरे के समर्थन में खड़ें हों। राजनैतिक फायदों को परे रख कर भाषा के माध्यम से देश को तोड़ने नहीं अपितु देश को जोड़ने की आवश्यकता है। साथ ही सामाजिक स्तर पर भी भारतीय भाषाओं के सम्मान, विकास एवं स्वाभिमान जगाने हेतु देशव्यापी अभियान प्रारंभ किया जाना चाहिए। इन सब प्रयासों के द्वारा ही हिंदी को विश्व भाषा बनने के पथ पर मंजिल हासिल हो सकेगी।

*****

विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिन्दी

(द्वितीय पुरस्कार)

उमेश कुमार
अवर अभियंता (सिविल)
भारत संचार निगम लिमिटेड
कार्यालय–महाप्रबंधक दूरसंचार, अयोध्या

प्रस्तावना : 14 सितम्बर, 1949 की सायं को सर्वसम्माति से संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधान का सुनियोजन किया गया। संविधान के अनुसार भारत संघ की राजभाषा हिंदी है। विश्व भाषा के रूप में भी विकसित होने के लिये हिंदी निरंतर प्रगतिशील है।

भाषा विकास की आधारशिला है जो मानव को अन्य प्राणी से विशिष्ट सिद्ध करती है। भाषा की अच्छाई–बुराई भाषा प्रयोगकर्ता पर निर्भर करती है। भाषा का वरदान और अभिश्राप इस उक्ति से स्पष्ट है कि द्रौपदी की तरह भाषा प्रयोग से महाभारत भी संभव है और महर्षियों की तरह वसुधैव कुटुम्बकम से विश्व बंधुत्व भी संभव है।

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी : आज वैश्वीकरण के दौर में हिंदी का महत्व और भी बढ़ गया है, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज विदेशों में अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन–पाठन का कार्य हो रहा है। ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में संबंधित विषयक पुस्तकें हिंदी में लिखी व अनुदित की जा रही हैं। इसके साथ ही हमारे विदेश मंत्रालय द्वारा समय–समय पर विश्व हिंदी सम्मेलन एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को विश्व पटल पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। विश्व हिंदी सचिवालय विदेशों में हिंदी का प्रचार–प्रसार करने व संयुक्त राष्ट्र में आधिकारिक भाषा बनाने के लिये कार्यरत है।

वर्तमान सरकार द्वारा हिंदी के लिये किये जा रहे कार्य और प्रधानमंत्री द्वारा विश्व स्तर पर विभिन्न मंचों से हिंदी में भाषण देना कहीं न कहीं हिंदी की विश्व स्तर पर व्यापकता दर्शाती है।

वैश्विक स्तर पर हिंदी : वैश्विक स्तर पर फिजी व मॉरिशस में हिंदी मातृभाषा के रूप में विराजित है। यहां पर विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन–पाठन का कार्य होता है। जापान में भी कई विश्वविद्यालयों में हिंदी का विभाग स्थापित है। हिंदी पूरे विश्व में लगभग 80 करोड़ लोगों द्वारा समझी जाती है। इसकी व्याप्ति लगभग डेढ़ सौ देशों में है।

हिंदी पूरे विश्व में कहीं मातृभाषा, कहीं पितृभाषा, दूसरी भाषा, तीसरी भाषा व चौथी भाषा के रूप में विद्यमान है। सिंगापुर में हिंदी को बढ़ावा देने के लिये कई संस्थाएं हैं। ऑस्ट्रेलिया में सिडनी हिंदी समाज, मेलबार्न हिंदी निकेतन का योगदान रहा है। विश्व के 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है।

वैज्ञानिक व प्रौद्योगिकी क्षेत्र में हिंदी : वर्तमान वैज्ञानिक युग में प्रौद्योगिकी और तकनीक क्षेत्रों में विकास के नए चरण स्थापित किये जा रहे हैं। विश्व बाजार की परिकल्पना सभी देशों के समक्ष है, ऐसी स्थिति में किसी एक देश द्वारा विकसित अथवा अनुसंधान की हुई प्रौद्योगिकी एवं तकनीक का प्रचार–प्रसार करने के लिये तत्संबंधी पाठ्य–सामग्री का दूसरी भाषा में अनुवाद वांछनीय है जिससे हिंदी भाषा की मांग विश्व स्तर पर बढ़ जाती है।

वैश्विक स्तर पर वाणिज्यिक का क्षेत्र व्यापक है। बैंकिंग एवं पर्यटन की शब्दावली ने वैश्विक स्तर पर हिंदी को विकास के नये आयाम प्रदान किये हैं।

वैश्विक स्तर पर कृषि और आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में नवीन अविष्कारों और अनुसंधानों के फलस्वरूप नवीन शब्दों

और नई संरचनाओं का आविर्भाव होता रहा है।

नये–नये अविष्कारों के फलस्वरूप विश्व की विभिन्न भाषाओं में प्रचलित शब्दों का अनुवाद हिंदी में आवश्यकता अनुरूप होते रहे हैं। प्रशासनिक भाषा के रूप में अनुवाद के माध्यम से हिंदी ने विश्व भाषा का दर्जा प्राप्त किया है। वस्तुत: हिंदी के विकास में अनुवाद का महत्व अमिट मील का पत्थर है जिससे प्रयोग की दिशा और दशा ने वैश्विक प्रगति में पहचान प्राप्त की है।

योग और अध्यात्म ने भी हिंदी को वैश्विक स्तर पर प्रचारित व प्रसारित किया है। विश्व स्तर में फैले इस्कॉन संस्था द्वारा भी हिंदी का कृष्ण भक्ति के रूप में खूब प्रचार–प्रसार होता रहता है।

उपसंहार : हिंदी ह्रदय की भाषा है। संस्कृत भाषा से निकलने के कारण हिंदी में संस्कृति समाई हुई है। वैश्विक पटल पर इसको प्रसारित करने के लिये अपने घर में सम्मान देना बहुत ही महत्वपूर्ण है। हिंदी के साथ पूरे विश्व का कल्याण होना, पूरे विश्व की समृद्धि निश्चित है। हिंदी का प्रचार–प्रसार राष्ट्रीय कर्तव्य है।

*****

विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिन्दी

(तृतीय पुरस्कार)

विशाल दूबे
प्रबंधक
पंजाब नैशनल बैंक
मण्डल कार्यालय, अयोध्या

हमारे देश में सबसे अधिक बोली, समझी और लिखी जाने वाली भाषा हिंदी है। **संख्या के आधार पर विश्व में हिंदी भाषा अंग्रेजी और मैंड्रेन भाषा के बाद तीसरे स्थान पर है।** भले ही अंग्रेज़ी मानसिकता वाले अंग्रेजी को सर्वश्रेष्ठ भाषा मानते हैं, लेकिन दैनिक भास्कर, जो एक हिंदी दैनिक है, सबसे अधिक प्रचार वाला अखबार है। दूसरे स्थान पर भी हिंदी का ही अखबार दैनिक जागरण है।

वर्ष 2007 से हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। 1975 से अब तक 11 अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किये जा चुके हैं। अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने की कोशिश की जा रही है।

वैश्विक भाषा बनने की पहली शर्त होती है कि अधिक से अधिक लोग उस भाषा में संवाद करें, उसमें दूसरी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता हो, उसका साहित्य समृद्ध हो आदि। इन सभी कसौटियों पर हिंदी भाषा खरी उतरती है। हिंदी भाषा केवल विचार अभिव्यक्ति का माध्यम न होकर शिक्षा, सेवा व संस्कार सिंचन का कार्य कर रही है। हिंदी में जो मिठास, भाव व अनेक प्रकार से बात कहने का तरीका है, वह किसी अन्य भाषा में नहीं है।

फिलहाल, चीन की भाषा मंदारिन दुनिया में सबसे अधिक बोली जाती है। इसे बोलने वालों की संख्या लगभग 1.3 अरब है। **विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग 60 करोड़ से अधिक है। लगभग 3 दर्जन से अधिक देशों में हिंदी भाषा का इस्तेमाल बोलचाल की भाषा के रूप में किया जा रहा है।** आज मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना, केन्या, नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड, इंडोनेशिया, चेकोस्लोवाकिया, सिंगापुर, नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, म्यांमार, बांग्लादेश, मालदीव, श्रीलंका, मलेशिया, चीन, मंगोलिया, कोरिया, जापान, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, कनाडा, जर्मनी, सयुंक्त अरब अमीरात आदि देशों में हिंदी बोली जा रही है। **अमेरिका में भी अंग्रेजी के बाद दूसरी सबसे लोकप्रिय भाषा हिंदी ही है।**

भूमंडलीकरण और बाजारवाद की वजह से हिंदी की

लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ रही है। उत्पादों का विज्ञापन हो या प्रचार प्रसार की भाषा हो, जब तक वह हिंदी में नहीं होगी, किसी उत्पाद को भारत में बेचने में मुश्किल होगी। बड़े बाजार होने के कारण ही अंग्रेजी व दूसरी विदेशी भाषाओं वाले फिल्मों को हिंदी में संवादित किया जा रहा है। इतना ही नहीं दक्षिण भारत एवं पंजाबी फिल्मों को भी हिंदी में संवादित किया जा रहा है। जाहिर है, हिंदी के विस्तार में भारतीय बाजार बड़ी भूमिका निभा रहा है।

हिंदी, इंटरनेट और कंप्यूटर के अनुकूल बन गई है। सच कहा जाये तो आज उसी भाषा को लोग आत्मसात करते हैं, जो तकनीक के अनुकूल हो साथ ही साथ कारोबार व विज्ञान के विकास में सहायक हो। हिंदी में बिजनेस अखबार प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें बिजनेस स्टैंडर्ड और इकनॉमिक टाइम्स सबसे महत्वपूर्ण है। लचीलेपन के कारण हिंदी नियमित तौर पर नये शब्दों को गढ़ रही है और आमजन उनका बोलचाल में प्रयोग कर रहे हैं।

निष्कर्ष

मौजूदा समय में हिंदी का कंप्यूटरीकरण अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में सबसे तेज गति से हो रहा है। हिंदी की बहुत सारी सामग्रियाँ ऑनलाइन एवं ऑफलाइन उपलब्ध हैं। विदेशी भाषाओं की फिल्मों को हिंदी में संवादित करके हिंदी बोलने व समझने वाले दर्शकों के सामने रखा जा रहा है। नई प्रौद्योगिकी ने हिंदी भाषा के स्वरूप में सकारात्मक बदलाव किया है। नई–नई तकनीक अपनाने की योग्यता होने की वजह से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का तेजी से विकास हो रहा है।

*****

विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिन्दी

(चतुर्थ पुरस्कार)

अमृत नारायण सिंह
सहायक, रुदौली शाखा
भारतीय जीवन बीमा निगम
अयोध्या

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और पसंद करने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। **यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है।** भारत की सबसे बड़ी भाषा हिंदी विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिंदी भाषा केवल विचार अभिव्यक्ति का माध्यम न होकर शिक्षा, सेवा व संस्कार सिंचन का कार्य कर रही है। हिंदी में जो मिठास, भाव व अनेक प्रकार से बात कहने का तरीका है, वह किसी अन्य भाषा में नहीं है। दुनिया के अनेक देशों में पढ़ी व पढ़ाई जाने वाली हमारी हिंदी वर्तमान में नवाचार व रोजगार के क्षेत्र में नित नई ऊंचाईयां छू रही है।

14 सितम्बर, 1949 को हिंदी देश की राजभाषा बनी। तबसे हिंदी ने कई उतार–चढ़ाव देखे फिर भी हिंदी देश एवं दुनिया में सतत आगे बढ़ती जा रही है। आज हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं है, इसका विस्तार विश्व के लगभग 130 देशों में हो चुका है। हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ फ़िज़ी की भी राजभाषा है तथा मॉरिशस, ट्रिनिदाद व टोबेगो, गुयाना और सूरीनाम में क्षेत्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसके साथ ही, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, जर्मनी, कनाडा, सिंगापुर, यू.ए.ई जैसे देशों में भी हिंदी भाषी बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। **जहां विकीपीडिया हिंदी को मंडारिन (चीनी) तथा अंग्रेजी के बाद तृतीय स्थान देता है वहीं शोधकर्ता डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल हिंदी का प्रथम स्थान अपने शोध में सिद्ध कर चुके हैं।** 2011 के आंकड़ों के अनुसार लगभग 42.20 करोड़ भारतीय हिंदी की 50 से अधिक बोलियों

में से एक इस्तेमाल करते हैं। वर्तमान में विश्व में दैनिक समाचार–पत्रों की दृष्टि से प्रथम बीस समाचार–पत्रों में हिंदी के पांच समाचार–पत्रों का समावेश है। दुनिया के लगभग 170 देशों में किसी न किसी रूप में हिंदी पढ़ाई जाती है। मॉस्को (रूस) को दुनिया में हिंदी भाषा के अध्ययन–अध्यापन के प्रमुख केंद्रों में से एक माना जाता है। रूस स्थित भारतीय दूतावास के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी भाषा निःशुल्क पढ़ाई जाती है। रूसी वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी भाषा के अनेक शब्दकोशों और पाठ्य–पुस्तकों की रचना एवं हिंदी साहित्य का अनुवाद बड़े पैमाने पर किया जाता रहा है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में हार्वर्ड, येल, शिकागो, वाशिंगटन, मोंटाना, टेक्सास एवं कैलिफोर्निया विश्वविद्यालयों समेत कई अन्य विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। अमेरिका के सरकारी स्कूलों में भी हिंदी भाषा का विकल्प दिया जा रहा है। इसी प्रकार ऑस्ट्रेलियन नेशनल विश्वविद्यालय, टोकियो विश्वविद्यालय, जॉन हॉपकिंस विश्वविद्यालय में भी हिंदी के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। पड़ोसी देश चीन के पेकिंग विश्वविद्यालय, गुआंडोंग विश्वविद्यालय सहित अनेक महाविद्यालयों में तथा बीजिंग स्थित गुरूकुल विद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है। इसके अतिरिक्त इंग्लैंड, सिंगापुर, फ़िज़ी के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में भी अनेक विदेशी छात्र, जिनमें जापानी, कोरियाई, छात्रों की संख्या अधिक है, भारत में स्थित विदेशी कंपनियों में आकर्षक नौकरी हेतु हिंदी में प्रवेश ले रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर भारत के बढ़ते आर्थिक, सामरिक, राजनैतिक प्रभाव को देखते हुए भारत की राजभाषा हिंदी को सीखने, जानने की ललक विदेशों में बढ़ती जा रही है। इसी क्रम में 17 सितम्बर, 2001 को भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना मॉरिशस में की गई है। हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने के प्रयासों में इस सचिवालय की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है।

आज दुनिया में लगभग साठ हजार भाषाएं किसी न किसी रूप में बोली और समझी जाती हैं, लेकिन आने वाले समय में 90 प्रतिशत से अधिक का अस्तित्व खतरे में है। भाषाओं के इस विलुप्तीकरण के दौर में हिंदी अपने को न केवल बचाने में सफल हो रही है, बल्कि उसका उपयोग–अनुप्रयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है। यह भाषा लगभग डेढ़ हजार वर्ष पुरानी है और इसमें डेढ़ लाख शब्दावली समाहित है। संप्रति हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त है, क्योंकि यह अनेक विदेशी भाषाओं को न केवल स्वीकार करती है बल्कि विश्व की समस्त भाषाओं को आत्मसात करने की क्षमता भी रखती है। विश्व के लगभग 140 देशों के लगभग पाँच सौ केंद्रों में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है, जहां न जाने कितने विद्वान अपना योगदान दे रहे हैं। कंप्यूटर, मोबाइल और आई–पैड पर हिंदी की पहुंच ने यह बात सिद्ध कर दी है कि आने वाले समय में इंटरनेट की भाषा अंग्रेजी न होकर हिंदी होगी।

जय जगत ! जय भारत ! जय हिंदी !

*****

"खेल–खेल में"..... हिन्दी क्रॉसवर्ड

1	2	3	
		4	
5			
	6		

क्र.सं. S.No.	बायें से दायें Across	क्र.सं. S.No.	ऊपर से नीचे Down
1	Official Language (4 अक्षर)	1	Gazettee (4 अक्षर)
4	Went (2 अक्षर)	2	Deposit (4 अक्षर)
5	Consult (4 अक्षर)	3	Part (2 अक्षर)
6	Peak/Heights (3 अक्षर)		

विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिन्दी

(पंचम पुरस्कार)

ले.कं. शैलेंद्र यादव
वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

अमीर खुशरो एक महान कवि, शायर जिसने 14वीं सदी में कई सुल्तानों के साथ काम किया। अमीर खुशरो प्रथम मुस्लिम कवि थे जिन्होंने हिंदी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदी, हिंदवी और फारसी में एकसाथ लिखा।

ज़े–हाल–ए–मिस्कीं मकुन
तग़ाफ़ुल दुराय नैनाँ बनाए बतियाँ
कि ताब–ए–हिज्राँ नदारम ऐ
जाँ न लेहू काहे लगाए छतियाँ
शबान–ए–हिज्राँ दराज़ चूँ ज़ुल्फ़
ओ रोज़–ए–वसलत चूँ उम्र–ए–कोताह
सखी पिया को जो मैं न देखूँ
तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियाँ

उक्त पंक्तियां दर्शाती हैं कि किस खूबसूरती के साथ अमीर खुशरो ने हिंदी और फारसी शब्दों का प्रयोग एक साथ किया। शायद इसीलिये अमीर खुशरो को हिंदी का जनक कहा जाता है।

हिंदी का सफर : 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी देश की राजभाषा बनी। तबसे हिंदी ने कई उतार–चढ़ाव देखे फिर भी हिंदी देश एवं दुनिया में सतत आगे बढ़ती रही। आज हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं है। इसका विस्तार विश्व के लगभग 130 देशों में हो चुका है। हिंदी भारत की राजभाषा के साथ–साथ फ़िज़ी की भी राजभाषा है तथा मॉरिशस, ट्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम में क्षेत्रीय भाषा के रूप में मान्यता–प्राप्त है। यह विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा है। दुनिया के लगभग 170 देशों में किसी न किसी रूप में हिंदी पढ़ाई जाती है। मॉस्को (रूस) को दुनिया में हिंदी भाषा के अध्ययन–अध्यापन के प्रमुख केंद्रों में से एक माना जाता है। मॉस्को विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा नि:शुल्क पढ़ाई जाती है। वैश्विक स्तर पर भारत के बढ़ते आर्थिक, सामरिक, राजनैतिक प्रभाव को देखते हुए भारत की राजभाषा हिंदी को सीखने–जानने की ललक विदेशों में बढ़ती जा रही है। इसी क्रम में 17 सितम्बर, 2001 को भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है।

विश्व भाषा बनने में चुनौतियां : किसी भी भाषा के संरक्षण हेतु उस भाषा में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा का उपलब्ध होना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। देश में शिक्षा व्यवस्था पर वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण अब मातृभाषा में शिक्षा की स्थिति कमजोर हो रही है। विश्व में विगत 40 वर्षों में लगभग 150 अध्ययनों के निष्कर्ष है कि मातृभाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिये।

देश के उच्च शिक्षा तंत्र में लगभग 60 लाख से अधिक छात्र गैर–महानगरीय क्षेत्रों से प्रवेश लेते हैं। वे अंग्रेजी से तालमेल नहीं बैठा पाते हैं। ज्यादातर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के शिक्षा का माध्यम मात्र अंग्रेजी है।

अधिकतर राज्यों से सामान्य उच्च शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी है। देश का सारा प्रशासनिक कार्य अधिकतर अंग्रेजी में किया जा रहा है। प्रतियोगी परीक्षाओं का माध्यम या तो अंग्रेजी है या अंग्रेजी का एक प्रश्न–पत्र अनिवार्य है। इसी प्रकार देश के न्यायालयों में आज भी अंग्रेजी में काम किया जा रहा है।

समाधान : जब तक हिंदी के समक्ष उपस्थित इन चुनौतियों का समाधान नहीं करेंगे तब तक हिंदी और भारतीय भाषाओं का वास्तविक उत्थान संभव नहीं होगा। उच्च शिक्षा के स्तर पर अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का विकल्प उपलब्ध कराना होगा। सामाजिक स्तर पर भी भारतीय भाषाओं के सम्मान, विकास एवं स्वाभिमान जगाने हेतु देशव्यापी अभियान प्रारंभ किया जाना चाहिये।

*****

पथिक

अतुल कुमार सिंह
अधिकारी (क्रेडिट)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

शुरू हुई है डगर अभी तो
क्यों अंदर ही अंदर मरता है
उठो चलो संघर्ष करो
हे रे पथिक क्यों डरता है...

डर कर कभी चिंटी भी एक
ना अपनी राह बदलती है
आये कोई भी बाधा
सीना ताने चलती है
कर दो हवन खुद का भी
तप के ही स्वर्ण चमकता है
हे रे पथिक क्यों डरता है...

सफलता कोई एक खेल नहीं
जो पलक झपकते मिल जाये
क्या देखा है कोई ऐसा पुष्प
जो बिना खाद के खिल जाये
लगन और परिश्रम से ही अभिमन्यु
चक्रव्यूह से बाहर निकलता है
हे रे पथिक क्यों डरता है...

हार तो अस्थाई है
हार से कभी ना हारो तुम
इरादे को फौलाद बना कर
हार के डर को मारो तुम
हिम्मत से ही तो प्रताप
हल्दी घाटी में लड़ता है
हे रे पथिक क्यों डरता है...

ना रुको कभी ना झुको कभी
रुका हुआ पानी ही अक्सर सड़ता है
हे रे पथिक क्यों डरता है...

माँ

सुभाष त्रिवेदी
मुख्य प्रबंधक
क्रेडिट विभाग
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

आज भी रोज की तरह माँ रसोई में थाली लेकर बैठी थी, वह खाना कम खाती और मुझसे बातें ज्यादा करती। ऐसा अमूमन रोज होता था, शाम को माँ खाना बनाती, घर के सभी बड़ों को परोसती, बच्चों को खिलाती, और सबसे बाद में अपनी थाली लेकर बैठती– तब तक घर के सभी बड़े अपनी–अपनी चारपाई पर पहुँच चुके होते और मैं माँ के पास बैठ जाता– माँ खाना खाती और साथ–साथ मुझे पढ़ाती जाती – इस पढ़ने पढ़ाने के बीच, मुझे सबसे ज्यादा मजा तब आता जब माँ मुझे कहानियाँ सुनाती– माँ को बहुत सारी कहानियाँ आती थी।

मेरे गाँव में उस समय तक बिजली तो नहीं आई थी, लेकिन माँ की कहानियाँ मुझे उजाले से भर देती थी।

आज भी माँ मुझे कहानी सुना रही थी, अंग्रेजों की कहानी बेटा अंग्रेज सात समुंदर पार से आये थे, और उन्होंने बड़ी चालाकी से अपने देश को गुलाम बना लिया था।

माँ ये गुलाम क्या होता है मैंने बड़ी सहजता से पूछा था।

गुलाम वो होता है, जिसकी अपनी जिन्दगी होती है, नहीं–नहीं जिंदगी भी अपनी नहीं होती, जिंदगी के नाम पर महज सांसें अपनी होती हैं, फैसले तो कोई और ही लेता है। हमारी जिन्दगी से जुड़े सारे फैसले अंग्रेज लेते थे, हमें सवाल पूंछने का भी हक नहीं था। माँ ने बड़े धीरे से जबाब दिया था।

दोपहर का वक्त रहा होगा, फेरी वाले ने गली से आवाज दी कपड़े ले लो, बच्चों के – बड़ों के, कपड़े लेलो, सूती, रंग बिरंगे कपड़े। आवाज सुनते ही मैं दौड़कर माँ के पास आया और बोला माँ चलो न देखो कपड़े बेचने वाला आया है, मुझे कपड़े दिला दो ना। आप भी अपने लिए ले लेना।

नहीं बेटा, तेरे बाबू जी ले आयेंगे कपड़े। माँ ने बड़े अनमने ढंग से कहा।

अच्छा माँ चलो देख ही लो, वो फेरी वाला सामने गली में खड़ा है मेरे जिद करने पर माँ ने थोड़ा सख्ती दिखाते हुए कहा, कह दिया न, कपड़े तेरे बाबू जी ले आयेंगे, और मैं बाहर नहीं जा सकती।

उस दिन शाम को जब बाबू जी घर आये, माँ ने उनको बताया आज फेरी वाला आया था, ये कपड़े लेने की जिद कर रहा था माँ ने मेरी तरफ इशारा किया। बाबू जी ने मेरी तरफ देखते हुए कहा, चल तुझे कल बाज़ार से कपड़े दिलवा लाता हूँ। मैंने खुश होते हुए कहा, बाबू जी माँ को भी ले चलो ना, माँ को भी कपड़े लेने हैं। बाबू ने तपाक से कहा, मैं ले आऊंगा माँ के लिए कपड़े।

मेरा गाँव के स्कूल में नाम लिखा दिया गया। आज मेरा स्कूल का पहला दिन था, मेरी बड़ी इच्छा थी कि आज मेरी माँ मुझे स्कूल छोड़ने जाएँ, मैंने इसके लिए माँ को मना भी लिया था। बाबू जी को जब इस बात की भनक लगी, तो उन्होंने माँ को यह कहते हुए झाड़ दिया कि, तुम जाओगी स्कूल छोड़ने, कुछ खयाल है घर की इज्जत का।

धीरे धीरे वक्त के साथ मैं भी बड़ा हो रहा था, मैं बचपन की दहलीज़ लांघकर जवानी की तरफ कदम बढ़ा रहा था।

लघु कहानी

लेकिन मेरी माँ आज भी घर की दहलीज नहीं लांघती थी. घर में सबसे पहले जगना और सबसे बाद में सोना, सबको खिलाने के बाद में खाना खाना और शायद घर के सारे कामों के साथ साथ उन पर घर की इज्जत का भी जिम्मा था, तभी तो वो अपना घूँघट एक पल के लिए भी छोटा नहीं होने देती थी.

मेरी माँ की जिंदगी से जुड़े सारे फैसले मेरे पापा ही लेते थे. माँ से तो पूछा भी नहीं जाता था, और अगर पूछा भी जाता था, तो शायद उनको पता होता था कि उन्हें हाँ ही कहना है, क्यूंकि पापा को तो न सुनने की आदत ही नहीं थी.

आज स्कूल में गुरूजी अंग्रेजों की कहानी सुना रहे थे, अंग्रेज सात समंदर पार से आये थे, और उन्होंने हम पर खूब शासन किया.

मैं यह सोच रहा था, हम पर शासन करने के लिए जरूरी नहीं कोई सात समंदर पार से आये,वह हमारे साथ रहने वाला भी हो सकता है.

*****

कविता

भाषा

आशुतोष सक्सेना
प्रबंधक (ऋण निगरानी)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

यदि भाषा न होती तो क्या होता,
यदि भाषा न होती तो मीठी लोरी न होती,
वो काली रातें कभी सुनहरी न होती।
उग जाता सूरज बिना किसी आहट के यूं ही,
यदि पंछियों की सुरीली बोली न होती।
ईश्वर के मधुरिम भजन न होते,
विवाह के सातों वचन न होते,
बीतता बचपन बिना लड़कपन के यूं ही,
यदि दादी-नानी की कविता कहानियां न होती।
खुशियों के पल, मायूसी में बीत जाते,
प्रेम अथवा पीड़ा, कभी न जता पाते।
गुमनामी में जी लेते पूरी जिंदगी यूं ही,
यदि बातचीत, हंसी ठिठोली न होती।
ईश्वर का दिया अनुपम उपहार है,
अपनी भाषा से हमको प्यार है,
करें सम्मान और गर्व अपनी भाषा पर,
यही हमारा व्यवहार और संस्कार है,
यही हमारा व्यवहार और संस्कार है।

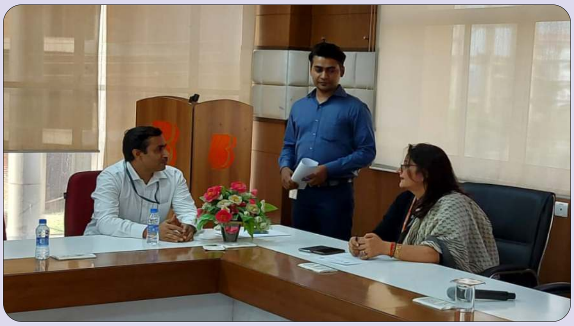

दिनांक 22 अप्रैल, 2022 को नराकास, फ़ैज़ाबाद के तत्वावधान में केनरा बैंक द्वारा **'स्मृति–परीक्षा प्रतियोगिता'** तथा नराकास, फ़ैज़ाबाद द्वारा राजभाषा प्रभारियों हेतु **'शब्द–संग्राम प्रतियोगिता'** का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्रीमती रजनी गुप्ता, क्षेत्रीय व्यावसायिक विकास प्रबंधक, अयोध्या क्षेत्र ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री मयंक पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, लखनऊ उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सदस्य सचिव श्री नीरज कुमार सिंह द्वारा किया गया।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या द्वारा 20 मई, 2022 को **'राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह, 2022'** का आयोजन किया गया जिसके दौरान डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के एम.ए. हिंदी से शैक्षणिक वर्ष 2019–21 हेतु उत्तीर्ण शीर्ष दो विद्यार्थियों को **'बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान'** के तहत क्रमशः रूपये 11,000/– एवं 7500/– के मानदेय एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया तथा अयोध्या क्षेत्र की शीर्ष शाखाओं (राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में) को 'राजभाषा शील्ड' देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अशोक कुमार जी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय से डॉ. चंद्रशेखर, सहायक प्रोफेसर उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री नीरज कुमार सिंह, प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या तथा डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के संयुक्त तत्वावधान में 29 मार्च, 2022 को 'हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाएं' विषय पर **'हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता'** का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. सुरेंद्र मिश्रा, समन्वयक–हिंदी भाषा एवं प्रयोजनमूलक विभाग, समन्वयक–अवधी एवं भोजपुरी भाषा, डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या द्वारा की गई। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नीरज कुमार सिंह, प्रबंधक (राजभाषा) उपस्थित रहे। हिंदी संकाय सदस्यों सहित डॉ. चंद्रशेखर, सहायक प्रोफेसर, डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या भी उपस्थित रहे।

गैर– निष्पादित आस्तियों की बढ़ती चुनौतियाँ

शरद दुबे
वरिष्ठ प्रबन्धक
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

निरंतर बढ़ती जा रही गैर–निष्पादित आस्तियां आज बैंकिंग उद्योग के लिए सबसे बढ़ी चुनौती के रूप में सामने आयी हैं। इनका लगातार बढ़ता हुआ विकराल रूप समूचे बैंकिंग उद्योग पर घनघोर संकट का बादल बनकर मंडरा रहा है। बैंकों के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगता जा रहा है। आम जनता का विश्वास बैंकों के ऊपर से खत्म होने का भय निरंतर बढ़ रहा है।

यह विचार करना अपरिहार्य है कि निरंतर बढ़ती गैर–निष्पादित आस्तियों के कारण क्यों आज बैंक बर्बादी के मुहाने पर खड़े हैं, और गैर–निष्पादित आस्तियां कम कैसे होंगी? बैंक शीर्ष प्रबंधन और शाखा स्तर पर क्या रणनीति अपनानी होगी? सरकार से किस तरह का सहयोग अपेक्षित है? साथ ही चूककर्ता ऋणियों से कैसे निपटा जाएगा?

गैर–निष्पादित आस्तियों के कारण

ऋण प्रदान करना बैंकिंग का प्रमुख कार्य है। ऋण से प्राप्त ब्याज से ही बैंक अपने जमाकर्ताओं को ब्याज प्रदान करते हैं और अपने अन्य परिचालन व्यय सम्पन्न करते हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि अगर ऋण गैर–निष्पादित अस्ति बन जाते हैं, तो ना केवल उन आस्तियों पर प्राप्त होने बाला ब्याज बैंक को नहीं मिलता बल्कि बैंक को ऋण की प्रकृति के आधार पर एक निश्चित धनराशि उस ऋण के लिए प्रावधान के रूप में अलग से रखनी पड़ती है। फलस्वरूप बैंक को दोहरी हानि होती है। इन गैर–निष्पादित आस्तियां की विकरालता के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :–

आंतरिक कारण –

1 सही ऋणी की पहचान में चूक।

2 शाखा में स्टाफ की कमी के कारण ऋण निगरानी में पर्याप्त समय ना मिल पाना।

3 ऋणों की बढ़ती संख्या के कारण ऋणों की गुणवत्ता में समझौता हो जाना।

4 कुछ शाखा प्रबन्धकों का अति महत्वाकांक्षी होना, फलस्वरूप सबसे आगे निकलने की होड़ में अनाप शनाप ऋण भी दे देना।

5 शाखा के अन्य स्टाफ द्वारा ऋण देने के लिए बाध्य करना/दबाव बनाना।

6 अनुभवहीन अधिकारियों को प्रबन्धक के रूप में नियुक्त करना।

7 पर्याप्त प्रशिक्षण एवं कार्यप्रणाली को सीखने व समझने में पर्याप्त समय न मिलना / दिया जाना।

8 प्रबन्धकों द्वारा ऋण ग्राहकों के साथ मिलीभगत करना।

9 ऋण देने में जल्दबाज़ी करना।

10 शीर्ष प्रबंधन द्वारा अधिक ऋण दिये जाने का दबाव बनाना।

11 ऋण मोनिट्रिंग के लिए पर्याप्त साधन ना होना।

12 उचित सतर्कता ना बरतना।

बाह्य कारण –

1 दलालों, बिचौलियों और एजेंट के माध्यम से ऋण दिया जाना।

2 सनदी लेखाकारों द्वारा कृत्रिम, भ्रामक एवं असत्य लेखा तैयार करके ऋण लेने के लिए ऋणियों और बैंकों के साथ अवैध गठजोड़ करना।

3 ऋणियों द्वारा जानबूझ कर की गयी चूक।

4 अयोग्य व्यक्तियों को ऋण उपलब्ध हो जाना।

5 कभी–कभी उत्पाद की मांग में असमान्य कमी या मांग बिलकुल समाप्त हो जाना।

6 देश की राजनैतिक परिस्थितियों के कारण ऋणों का गलत ढंग से वितरण एंव ऋण माफी।

7 बड़े ऋणियों का देश छोड़कर फरार हो जाना।

8 ऋण लेकर उस धनराशि को अन्यत्र खर्च कर देना।

9 व्यापार करने की पर्याप्त कुशलता का अभाव।

10 बैंकों द्वारा वसूली में शिथिलता का लाभ लेना।

11 नए या लालची प्रबन्धकों को झांसा या लालच देकर गलत ढंग से ऋण प्राप्त कर लेना।

12 प्रबन्धकों पर दबाव बनाकर, गुमराह करके, लालच देकर या हनी जाल में फंसाकर ऋण प्राप्त कर लेना।

गैर–निष्पादित आस्तियों की वसूली के उपाय

सरकारी स्तर पर –

1 बैंकों को अपने ऋणों की वसूली के व्यापक अधिकार एवं शक्ति प्रदान करना।

2 बड़े ऋणियों के देश से फरार होने पर रोक।

3 बैंकों के पक्ष में लाभदायी कानून बनाना जोकि बेहद आसान, प्रभावी एवं कम समय में परिणाम देने वाले हों।

4 बड़े ऋणों में राजनैतिक दखलंदाज़ी ना हो।

5 बैंक प्रबन्धकों द्वारा किसी दबाव की शिकायत पर उचित सुरक्षा एवं संरक्षण मिलना एवं दोषियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करना।

6 बड़े बकायेदारों की सूची सार्वजनिक करना एवं बैंकों को उनको आगे से ऋण देने पर रोक लगाना।

ऋणियों के स्तर पर –

1 अपनी जिम्मेदारियों को समझना एवं ऋण चुकाने की हर संभव कोशिश करना।

2 ऋण राशि का उपयोग उसी कार्य के लिए करना जिसके लिए ऋण लिया था।

3 ऋण भुगतान में चूक होने पर बैंक से संपर्क करना एवं पूर्ण सहयोग करना।

4 अगर उद्यम बंद है तो उसे शुरू करने का प्रयास ईमानदारी से करना।

आंतरिक स्तर पर –

1 योग्य एवं ईमानदार प्रबन्धकों की नियुक्ति।

2 अनुभवी एवं प्रशिक्षित प्रबन्धकों को वरीयता देना।

3 उचित निगरानी एवं समुचित नियंत्रण की पर्याप्त व्यवस्था करना।

4 प्रबन्धकों पर पूर्ण नज़र रखना।

5 दोषी प्रबन्धकों को समय से समुचित दंड देना।

6 अनावश्यक दबाव ना बनाना।

7 निजी स्तर पर हर किसी का ईमानदार होना।

*****

जन कल्याणकारी योजनाओं की सफलता में भारतीय भाषाओं की भूमिका

सुभाष त्रिवेदी
मुख्य प्रबंधक
क्रेडिट विभाग
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

''भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मन के भावों और विचारों को प्रकट किया जाता है और दूसरों के भावों और विचारों को जाना जाता है।'

सन् 1961 की जनगणना के अनुसार अपने देश में लगभग 1652 विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं। बहुत सारे क्षेत्र, यहाँ तक कि कई राज्य भाषाओं के आधार पर ही जाने जाते हैं। उस क्षेत्र की भाषा ही वहाँ के जन की पहचान होती है। अतः कोई भी योजना जो जन के कल्याण के लिए है उसकी सफलता में भाषा की भूमिका स्वतः ही अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

जन कल्याणकारी योजनाओं की सफलता में भाषाओं की भूमिका को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

क. जन कल्याणकारी योजनाओं के निर्माण में भाषाओं की भूमिका :

कोई भी जन कल्याणकारी योजना जनता के हितों को ध्यान में रखकर ही बनाई जाती है। जनता के हित क्या हैं, यह जानने के लिए जनता के साथ संवाद स्थापित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। संवाद स्थापित करने का माध्यम भाषा ही है। भाषा का मतलब सिर्फ बोलना ही नहीं होता। कहते हैं कि गूँगे व्यक्ति की भी अपनी भाषा होती है। गूँगे व्यक्ति से संवाद स्थापित करने के लिए हमें भी गूंगा बनना पड़ता है। अतः यह स्पष्ट है कि जन सामान्य की समस्याओं के बारे में जानने, और उनका निराकरण खोजने के लिए हमें उनकी भाषा में संवाद करना होगा। इस सम्बन्ध में राजकीय भाषा हिंदी व अंग्रेजी के साथ साथ क्षेत्रीय भाषाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है.

भाषाएं वो धागा हैं जिनमें संवाद के मोतियों को पिरो कर के जन कल्याणकारी योजना रूपी माला की उत्पत्ति होती है।

ख. जन कल्याणकरी योजनाओं के प्रचार – प्रसार में भाषाओं की भूमिका :

किसी भी योजना की सफलता प्रमुख रूप से इस बात पर निर्भर करती है कि उसका प्रचार–प्रसार कितने प्रभावी ढंग से हुआ है। कई बार ऐसा होता है कि जनता को पता ही नहीं होता कि, उनके लिए कोई योजना भी है. योजना के नियम, पात्रता व मिलने वाले लाभों आदि के बारें, जितने प्रभावी ढंग से जनता को बताया व समझाया जायेगा, वह योजना उतनी ही जन कल्याणकारी सिद्ध होगी। अतः यहाँ भी भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

किसी भी योजना की सफलता में प्रचार व प्रसार, तथा प्रचार–प्रसार में भाषा के प्रभावी इस्तेमाल की भूमिका को इस उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है।

प्रधानमंत्री जन धन योजना एक सफल जन कल्याण कारी योजना के रूप में स्थापित हुई है। इस योजना की सफलता का श्रेय प्रमुख रूप से प्रधान मंत्री द्वारा लालकिले की प्राचीर से जनता से सीधे स्थापित किये गए प्रभावी संवाद को जाता है। बैंकों में किसी न किसी रूप में यह योजना पहले से भी मौजूद थी, फिर भी उतनी

संख्या में खाते नहीं खुलते थे। प्रधानमंत्री जी के संबोधन के बाद से बैंकों में लम्बी कतारें देखी जा सकती थी।

भाषा वह मार्ग है, जिस पर चलके कोई भी योजना सरकारी फाइलों से निकलकर जनता की चौखट तक पहुँचती है। किसी भी योजना को जन कल्याणकारी होने का तमगा जनता ही देती है।

ग. योजना के क्रियान्वयन में भाषाओं की भूमिका :

कोई भी योजना कितनी भी अच्छी क्यूँ न हो, अगर उसका क्रियान्वयन अच्छे तरीके से न हो तो वह फाइलों तक ही सीमित होकर रह जाती है। क्रियान्वयन की जिम्मेदारी प्रमुख रूप से सरकारी तंत्र व कर्मचारियों को जाती है। जमीनी स्तर पर जनता से प्रभावी ढंग से बात करना ही योजना के सफल क्रियान्वयन का मूल मंत्र है। बात प्रभावी तभी हो सकती है, जब भाषा का प्रभावी इस्तेमाल हो। जनता से संवाद अगर जनता की भाषा में ही किया जाये तो वह अधिक प्रभावी होता है।

बिहार के बाढ़ प्रभावित इलाकों में राहत व बचाव कार्यों की जिम्मेदारी, अगर सिर्फ मलयाली जानने वाले व्यक्ति को दे दी जाये, तो शायद वह उतना प्रभावी नहीं होगा, जितना कोई हिंदी जानने वाला।

घ. जनता की प्रतिक्रिया तथा योजना के मूल्यांकन में भाषाओं की भूमिका :

अंत में जनता की प्रतिक्रिया जानना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। जनता की प्रतिक्रिया योजनाओं के आंकलन के लिए आवश्यक होती है। इसके आधार पर सरकार वर्तमान योजनाओं में सुधार तथा भविष्य की योजनाओं का निर्माण करती है।

प्रतिक्रिया जानने का एक निश्चित प्रारूप होना चाहिए, जिससे जनता निर्भय होकर अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सके। भाषाएं भावनाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम होती हैं।

जन कल्याणकारी शब्द में जन अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे लिए बड़े गर्व की बात है कि, भारत का जन 1652 भाषाओं में सफलता पूर्वक संवाद करता है। किसी भी योजना को जन के लिए कल्याणकारी बनाने के लिए जन की भाषाएं हर कदम पर मार्गदर्शक बनेंगी।

*****

"खेल-खेल में"..... हिन्दी क्रॉसवर्ड

1			2	3
4				
5		6		
7				
		8		

क्र.सं. S.No.	बायें से दायें Across	क्र.सं. S.No.	ऊपर से नीचे Down
1	Equal (3 अक्षर)	1	Secretariat (5 अक्षर)
2	Tax (2 अक्षर)	2	Employee (4 अक्षर)
4	Picture (2 अक्षर)	3	Amount (3 अक्षर)
5	Legal Heir (3 अक्षर)	6	Near (3 अक्षर)
7	Target (2 अक्षर)		
8	First (3 अक्षर)		

आइए मणिपुर चलें

रजत कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय
फ़ैज़ाबाद कैंट, अयोध्या

'पोलो' जो अंग्रेज़ो का या शाही खेल लगता है, वह भारत के इस छोटे से राज्य की देन है। नाम के अनुरूप यह राज्य सच ही भारत का आभूषण है– मणिपुर. प्रकृति ने इस राज्य को इतना कुछ दिया है कि लगता है कि शायद जगह की कमी पड़ गई है वरना और बहुत कुछ देता विधाता। तीन राज्यों और एक अंतर्राष्ट्रीय सीमा से लगता यह राज्य बेहद खूबसूरत है। इसके पश्चिम में असम, उत्तर में नागालैंड, दक्षिण में मिजोरम और पूरब में मयनमार है। जी हाँ, राज्य के दक्षिण की कुछ अंतर्राष्ट्रीय सीमा भी मयनमार से ही लगी है। राज्य के उत्तर और पूर्व में तो ऊंची पहाड़ियाँ हैं लेकिन मध्य भाग में स्थित घाटी में समतल भूमि है। असल में पहाड़ियाँ तो मध्य भाग के चारों ओर है क्योंकि घाटी क्षेत्र तो वही होता है जो चारों ओर से पहाड़ों से घिरा होता है। राज्य का यह घाटी क्षेत्र दस प्रतिशत के लगभग है शेष भाग तो पहाड़ियाँ ही हैं। घाटी में ज़्यादातर यहाँ के मूल निवासी मेइति ही रहते हैं। इन्हीं लोगों की भाषा मेइतिलोन या मणिपुरी कहलाती है। जब भाषा की बात आई तो याद दिला दें यह भाषा भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 1992 में शामिल की गई थी। वैसे तो लगभग बारह लाख लोग इस भाषा को बोलते हैं परंतु इस क्षेत्र की संपर्क भाषा और राज्य की शिक्षा का माध्यम होने के कारण मणिपुरी का महत्त्व बहुत अधिक है। आठवीं अनुसूची में शामिल की जाने वाली यह पहली तिब्बती–बर्मी भाषा है।

मणिपुर का लिखित इतिहास पहली शताब्दी से प्रारम्भ हो जाता है। सन् 33 में पखङ्ग्बा के राज्याभिषेक का उल्लेख मिलता है। यह राजवंश परंपरा उन्नीसवीं शताब्दी तक चलती रही परंतु इसमें बाधा तब आ गई जब 1819 में बर्मा के शासकों ने यहाँ कब्जा कर लिया। यह शासन बहुत समय तक नहीं चला। 1825 में उनका अधिकार समाप्त हो गया। परंतु मणिपुर की आज़ादी भी बहुत समय तक बरकरार नहीं रही। 1891 में यह क्षेत्र अंग्रेज़ो के अधीन आ गया। स्वतंत्र तब हुआ जब अग्रेज़ यहाँ से चले गए अर्थात 15 अगस्त 1947 को। प्रारम्भ में एक केंद्रशासित राज्य के रूप में इसे मान्यता मिली और यहाँ का प्रशासक मुख्य–आयुक्त के नाम से जाना गया। 19 दिसंबर 1969 से प्रशासक का पद उप–राज्यपाल का कर दिया गया। 21 जनवरी 1972 को मणिपुर को पूर्ण राज्य का दर्ज़ा प्राप्त हुआ और साठ सदस्यीय विधानसभा का गठन किया गया।

यहाँ के लोग मुख्य रूप से खेती से जुड़े हैं और चूंकि 78 प्रतिशत वनक्षेत्र है, इनकी निर्भरता वनों पर भी है। फसलों में सबसे ज्यादा चावल का उत्पादन होता है जो क्षेत्रफल की दृष्टि से लगभग 72 प्रतिशत है। अपनी पूरी यात्रा में मैंने कहीं भी गेहूं की खेती नहीं देखी न ही किसी स्थानीय रेस्टोरेन्ट में मुझे रोटी मिली। हाँ, चावल की खुशबू आपको विचलित अवश्य कर देगी। जब बात चावल की किया हूँ तो एक बात और बता दूँ। यहाँ एक किस्म का चावल होता है जो लाल और काले रंग का मिला–जुला रूप होता है और इसका अक्सर उपयोग

खीर बनाने में किया जाता है। यह खीर वास्तव में बहुत स्वादिष्ट होती है। बात फसलों से व्यंजनों पर पहुँच गई। व्यंजनों की बात फिर होगी पहले ये बता दूँ कि चावल के अलावा यहाँ मक्का, गन्ना, तंबाकू, फल और सब्जियाँ भी खेती के हिस्से हैं।

यहाँ हिन्दू धर्म को मानने वाले लगभग 46 प्रतिशत हैं, ईसाई धर्मावलम्बी लगभग 34 प्रतिशत हैं और इस्लाम को मानने वाले 9 प्रतिशत से कुछ कम हैं, बचे हुए हिस्से में अन्य धर्म को मानने वाले लोग आते हैं। लोगों की मान्यताओं और रहन–सहन में भारत की केंद्रस्थ–भूमि की तुलना में बहुत अंतर नहीं दिखता। वही रीति–रिवाज भी दिखेंगे आपको पर अलग जो है वह है मातृ–सत्तात्मकता का पुट। यहाँ विवाह में ज़्यादातर खर्च वर–पक्ष की ओर से होता है, यह सुखद आश्चर्य है। पर्दा–प्रथा नहीं है परंतु घर के बड़े–बूढ़े वस्त्रों की शालीनता पर बहुत ध्यान देते हैं। यहाँ पर स्कूलों का यूनिफॉर्म बहुत–बहुत अच्छा लगेगा। यूनिफॉर्म पारंपरिक परिधान का ही रूप होता है। एक स्कूल शिक्षिका प्राणिता शिंघा से मैंने इसका कारण पूछा तो उनका कहना था कि यहाँ के लोगों की सांस्कृतिक पहचान की इच्छा प्रबल है और यही कारण है कि विद्यालयी स्तर पर भी इसे देखा जा सकता है।

यहाँ का हथकरघा उद्योग बहुत प्रतिष्ठित है। इस कार्य में महिलाएं ज्यादा लगी होती है। यह महिलाओं के जीवन से जुड़ा हुआ उद्योग है और बहुत लोकप्रिय है। कृषि के बाद

सबसे अधिक लोगों को रोजगार देने वाला यही उद्योग है। जैव–विविधता की दृष्टि से यह राज्य बहुत सम्पन्न है। विभिन्न वनस्पतियों और जीव–जंतुओं के कारण ही राज्य को कई विशेषणों से विभूषित किया जाता है, यथा– अटारी का फूल, भारत का आभूषण, पूरब का स्विटिजरलैंड इत्यादि। उखरुल ज़िले में एक स्थान है– शिराय। यहाँ लिली पुष्प की एक ऐसी प्रजाति पाई जाती है जो दुनिया में अन्यत्र नहीं मिलती। स्थान के आधार पर इसका नाम शिराय–लिली पड़ गया है। वैसे वनस्पति वैज्ञानिक इसे लिलियम–मैक्लिनि कहते हैं। ऐसे ही जूको घाटी में दुर्लभ प्रजाति का जूको–लिली पाया जाता है।

सिर्फ लिली ही नहीं, यहाँ दुर्लभ प्रजाति का संघाई हिरण भी पाया जाता है। इसका निवास–स्थान केइबुल–लामजाओ वनक्षेत्र है। एक स्थानीय निवासी संजय शिंघा ने बताया कि इन हिरणो को नाचने वाला हिरण भी कहा जाता है क्योंकि यह दौड़ते–दौड़ते अचानक रुकता है, पीछे देखता है फिर दौड़ता है। यह क्रम लगातार जारी रहता है। इसे देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी कि प्रतीक्षा में हो। 1977 में इस क्षेत्र को राष्ट्रीय पार्क का दर्ज़ा दे दिया गया। यह विश्व का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान है। तैरता हुआ उद्यान सुनकर अचरज होता है। चलिए इसको भी जान लेते हैं।

राज्य के विष्णुपुर ज़िले में लोकताक झील (वास्तव में यहाँ झील लिखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि

स्थानीय भाषा में ताक का अर्थ ही है– झील) है। यह पूर्वोत्तर के ताजे पानी की सबसे बड़ी झील है। इस झील में गोल घेरे वाली तैरती घासें होती हैं। ये घासें इतनी घनी व विस्तृत होती हैं कि स्थानीय मछुआरे इनके ऊपर अस्थायी घर भी बना लेते हैं। इन गोल घेरे वाली घासों को फुमदी कहा जाता है। केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय पार्क इसी झील के दक्षिणी तट की शोभा बढ़ा रहा है। इन फुमदियों के कारण ही इस पार्क को तैरता हुआ पार्क कहते हैं। फुमदियों के बारे में मणिपुर की निवासी बिजया देवी ने बताया कि मछुआरों के लिए ये इतनी महत्त्व की हैं कि नए जोड़े को दहेज में दी जाती हैं जिससे जीविकोपार्जन में कोई समस्या न हो। यह झील राजधानी इम्फाल से लगभग 48 किलोमीटर की दूरी पर है। प्राइवेट टैक्सी, शेयर्ड टैक्सी या बस से आसानी से पहुंचा जा सकता है। जब भी लोकतक देखने आइए सेन्ड्रा–द्वीप अवश्य आइए। यहाँ की छोटी नौका पर विहार कीजिए। यकीन मानिए सुमित्रानंदन पंत से अच्छी कविता लिख पाएंगे– नौका विहार पर। प्रवासी पक्षियों को देखकर आकर्षण जगेगा सो अलग।

मणिपुर में और भी आकर्षण है। राजधानी इम्फाल में कंगला पार्क, श्री श्री गोविंद मंदिर, टिकेन्द्रजीत पार्क और महिलाओं द्वारा संचालित इमा–बाज़ार में आपका मन ज़रूर रमेगा। इमा अर्थात माताओं द्वारा संचालित इस बाज़ार में आपको घरेलू सामग्री से लेकर फल, सब्जियाँ और हथकरघा के उत्पाद मिलेंगे। ऊनी और गरम कपड़े आपकी पसंद के मिलेंगे कि आपका दिल खरीदे बिना नहीं मानेगा। यह पूरा बाज़ार लगभग 3000 महिलाओं द्वारा संचालित होता है।

घूमने के लिए तो बहुत कुछ है पर मणिपुर आएँ तो मोरे ज़रूर जाएँ। यह भारत–मयनमार सीमा का क्षेत्र है। यहाँ आप बाज़ार घूम सकते हैं और कुछ दूर तक बिना वीज़ा–पासपोर्ट के विदेश भ्रमण का गौरव प्राप्त कर सकते हैं। हमारा आग्रह है कि समय ज्यादा लेकर आएँ और मणिपुर के कुछ और दर्शनीय स्थलों का आनंद लें। उदाहरण के लिए विष्णुपुर का विष्णु मंदिर जो पंद्रहवीं शताब्दी में बना था। द्वितीय विश्व–युद्ध की याद दिलाता युद्ध–कब्रिस्तान, खांघमपात, लोईकोई पात, रेड हिल, सादू चीरू प्रपात, मोइरेङ्ग–जो कि मेथेई लोक संस्कृति और आईएनए म्यूज़िम के लिए विख्यात है और खाङ्गजिम वार मेमोरियल।

मणिपुर त्योहारों का देश है यहाँ के लोग हमेशा कोई न कोई त्योहार मनाते ही रहते हैं. मतलब पूरा साल बिताइए और त्योहारों का तुत्फ उठाइए. न समय हो तो भी रासलीला और रथयात्रा ज़रूर देखकर जाइए. त्योहारों के समय या किसी खास अवसर पर जब आपकी थाली में 20–25 व्यंजन आएंगे उन्हे आप पूरे जीवन में नहीं भूल सकते. तो सारी चिंताएँ, सारी दुनियादारी छोडकर मणिपुर ज़रूर आए.

*****

हरिवंशराय बच्चन

सूर्य बने मधु का विक्रेता,
सिंधु बने घट, जल, हाला,
बादल बन-बन आए साकी,
भूमि बने मधु का प्याला,
झड़ी लगाकर बरसे मदिरा रिमझिम,
रिमझिम, रिमझिम कर,
बेलि, विटप, तृण बन मैं पीऊँ,
वर्षा ऋतु हो मधुशाला।

हरिवंश राय बच्चन भारतीय कवि थे, जो 20वीं सदी में भारत के सर्वाधिक प्रशिक्षित हिंदी भाषी कवियों में से एक थे। इनकी 1935 में प्रकाशित हुई लंबे लिरिक वाली कविता 'मधुशाला' ने उन्हें एक अलग प्रसिद्धि दिलाई। दिल को छू जाने वाली कार्यशैली वर्तमान समय में भी हर उम्र के लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ती है। डॉ हरिवंश राय बच्चन जी ने हिंदी साहित्य में अविस्मरणीय योगदान दिया है। वे हिन्दी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक थे।

27 नवंबर, 1907 को इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में जन्मे हरिवंश राय बच्चन हिन्दू कायस्थ परिवार से संबंध रखते हैं। यह 'प्रताप नारायण श्रीवास्तव' और 'सरस्वती देवी' के बड़े पुत्र थे। इनको बाल्यकाल में 'बच्चन' कहा जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ 'बच्चा या संतान' होता है। बाद में हरिवंश राय बच्चन इसी नाम से मशहूर हुए। 1926 में 19 वर्ष की उम्र में उनका विवाह 'श्यामा बच्चन' से हुआ जो उस समय 14 वर्ष की थी। लेकिन 1936 में श्यामा की टी.बी के कारण मृत्यु हो गई। पाँच साल बाद 1941 में बच्चन ने पंजाब की तेज़ीसूरी से विवाह किया जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थीं। इसी समय उन्होंने 'नीड़ का पुनर्निर्माण' जैसे कविताओं की रचना की। तेज़ीबच्चन से अमिताभ तथा अजिताभ दो पुत्र हुए। अमिताभ बच्चन एक प्रसिद्ध अभिनेता हैं। तेज़ीबच्चन ने हरिवंश राय बच्चन द्वारा 'शेक्सपीयर' के अनुदित कई नाटकों में अभिनय किया है।

उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी का अध्यापन किया। बाद में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे। अनन्तर राज्य सभा के मनोनीत सदस्य रहे। बच्चन जी की गिनती हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में होती है।

आरंभिक जीवन

हरिवंश राय बच्चन ने कायस्थ पाठशाला में पहले उर्दू और फिर हिन्दी की शिक्षा ली जो उस समय कानून की डिग्री के लिए पहला कदम माना जाता था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्नातकोत्तर (एम.ए.) और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य के विख्यात कवि डब्लू.बी. यीट्स की कविताओं पर शोध कर पीएचडी पूरी की थी।

1926 में 19 वर्ष की उम्र में उनका विवाह श्यामा बच्चन से हुआ था, जो उस समय 14 वर्ष की थी। 1936 में टीबी

के कारण श्यामा की मृत्यु हो गई। 5 साल बाद 1941 में बच्चन ने एक पंजाबन तेजी सूरी से विवाह किया जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थी। इसी समय उन्होंने नीड़ का निर्माण फिर–फिर जैसी कविताओं की रचना की. तेजी बच्चन से अमिताभ तथा अजीताभ पुत्र हुए।

हरिवंश राय बच्चन, तेजी बच्चन और पुत्र अमिताभ

अमिताभ बच्चन का प्रसिद्ध अभिनेता है। तेजी हरिवंश राय बच्चन ने शेक्सपियर के अनूदित कई नाटकों में अभिनय किया है।

1952 में हरिवंश राय बच्चन पढ़ने के लिए इंग्लैंड चले गए, जहां कैंब्रिज विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य / काव्य पर शोध किया। 1955 में कैम्ब्रिज से वापस आने के बाद भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषण के रूप में नियुक्त हो गए। हरिवशं राय बच्चन राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे है। 1976 में हरिवंश राय बच्चन को पद्मभूषण की उपाधि मिली। इससे पहले उनको 2 चट्टाने के लिए 1968 में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला था।

साहित्यिक परिचय

'बच्चन' की कविता के साहित्यिक महत्त्व के बारे में अनेक मत हैं। 'बच्चन' के काव्य की विलक्षणता उनकी लोकप्रियता है। यह नि:संकोच कहा जा सकता है कि आज भी हिन्दी के ही नहीं, सारे भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में 'बच्चन' का स्थान सुरक्षित है। इतने

बच्चन जी अपने महानायक पुत्र अमिताभ व महाकवि सुमित्रानंदन पंत के साथ

विस्तृत और विराट श्रोतावर्ग का विरले ही कवि दावा कर सकते हैं।

सर्वग्राह्य और सर्वप्रिय

'बच्चन' की कविता इतनी सर्वग्राह्य और सर्वप्रिय है क्योंकि 'बच्चन' की लोकप्रियता मात्र पाठकों के स्वीकरण पर ही आधारित नहीं थी। जो कुछ मिला वह उन्हें अत्यन्त रुचिकर जान पड़ा। वे छायावाद के अतिशय सुकुमार्य और माधुर्य से, उसकी अतीन्द्रिय और अति वैयक्तिक सूक्ष्मता से, उसकी लक्षणात्मक अभिव्यंजना शैली से उकता गये थे। उर्दू की ग़ज़लों में चमक और लचक थी, दिल पर असर करने की ताक़त थी, वह सहजता और संवेदना थी, जो पाठक या श्रोता के मुँह से बरबस यह कहलवा सकती थी कि, **मैंने पाया यह कि गोया वह भी मेरे दिल में है।** मगर हिन्दी कविता जनमानस और जन रुचि से बहुत दूर थी। 'बच्चन' ने उस समय (1935 से 1940 ई. के व्यापक खिन्नता और अवसाद के युग में) मध्यवर्ग के विक्षुब्ध, वेदनाग्रस्त मन को वाणी का वरदान दिया। उन्होंने सीधी, सादी, जीवन्त भाषा और सर्वग्राह्य, गेय शैली में, छायावाद की लाक्षणिक वक्रता की जगह संवेदनासिक्त अभिधा के माध्यम से, अपनी बात कहना आरम्भ किया और हिन्दी काव्य रसिक सहसा चौंक पड़ा, क्योंकि उसने पाया यह कि वह भी उसके दिल में है। 'बच्चन' ने प्राप्त करने के उद्देश्य से चेष्टा करके यह राह ढूँढ निकाली और अपनायी हो, यह बात नहीं है, वे अनायास ही इस राह पर आ गये। उन्होंने अनुभूति से

प्रेरणा पायी थी, अनुभूति को ही काव्यात्मक अभिव्यक्ति देना उन्होंने अपना ध्येय बनाया।

पहला काव्य संग्रह

एक प्रकाशन 'तेरा हार' पहले भी प्रकाशित हो चुका था, पर 'बच्चन' का पहला काव्य संग्रह 1935 ई. में प्रकाशित 'मधुशाला' से ही माना जाता है। इसके प्रकाशन के साथ ही 'बच्चन' का नाम एक गगनभेदी रॉकेट की तरह तेज़ी से उठकर साहित्य जगत पर छा गया। 'मधुबाला', 'मधुशाला' और 'मधुकलश'–एक के बाद एक, ये तीनों संग्रह शीघ्र ही सामने आ गये हिन्दी में जिसे 'हालावाद' कहा गया है। ये उस काव्य पद्धति के धर्म ग्रन्थ हैं। उस काव्य पद्धति के संस्थापक ही उसके एकमात्र सफल साधक भी हुए, क्योंकि जहाँ 'बच्चन' की पैरोडी करना आसान है, वहीं उनका सच्चे अर्थ में, अनुकरण असम्भव है। **अपनी सारी सहज सार्वजनीनता के बावजूद 'बच्चन' की कविता नितान्त वैयक्तिक, आत्म–स्फूर्त और आत्मकेन्द्रित है।**

प्रेरणा

'बच्चन' ने इस 'हालावाद' के द्वारा व्यक्ति जीवन की सारी नीरसताओं को स्वीकार करते हुए भी उससे मुँह मोड़ने के बजाय उसका उपयोग करने की, उसकी सारी बुराइयों और कमियों के बावज़ूद जो कुछ मधुर और आनन्दपूर्ण होने के कारण गाह्य है, उसे अपनाने की प्रेरणा दी। उर्दू कवियों ने 'वाइज़' और 'बज़ा', मस्जिद और मज़हब, क़यामत और उक़्वा की परवाह न करके दुनिया–ए–रंगों–बू को निकटता से, बार–बार देखने, उसका आस्वादन करने का आमंत्रण दिया है। ख़्याम ने वर्तमान क्षण को जानने, मानने, अपनाने और भली प्रकार इस्तेमाल करने की सीख दी है, और 'बच्चन' के 'हालावाद' का जीवन–दर्शन भी यही है। यह पलायनवाद नहीं है, क्योंकि इसमें वास्तविकता का अस्वीकरण नहीं है, न उससे भागने की परिकल्पना है, प्रत्युत्त वास्तविकता की शुष्कता को अपनी मनस्तरंग से सींचकर हरी–भरी बना देने की सशक्त प्रेरणा है। यह सत्य है कि 'बच्चन' की इन कविताओं में रूमानियत और क़सक़ है, पर **हालावाद ग़म ग़लत करने का निमंत्रण है; ग़म से घबराकर ख़ुदक़शी करने का नहीं।**

सर्वोत्कृष्ट काव्योपलब्धि

हरिवंशराय बच्चन, सुमित्रानंदन पंत और रामधारी सिंह 'दिनकर'

अपने जीवन की इस मंज़िल में 'बच्चन' अपने युवाकाल के आदर्शों और स्वप्नों के भग्नावशेषों के बीच से गुज़र रहे थे। पढ़ाई छोड़कर राष्ट्रीय आंदोलन में क़ूद पड़े थे। अब उस आंदोलन की विफलता का कड़वा घूँट पी रहे थे। एक छोटे से स्कूल में अध्यापक की नौकरी करते हुए वास्तविकता और आदर्श के बीच की गहरी खाई में डूब रहे थे। इस अभाव की दशा में पत्नी के असाध्य रोग की भयंकरता देख रहे थे, अनिवार्य विद्रोह के आतंक से त्रस्त और व्यथित थे। परिणामत: 'बच्चन' का कवि अधिकाधिक अंतर्मुखी होता गया। इस युग और इस 'मूड' की कविताओं के संग्रह 'निशा निमंत्रण' (1938 ई.) तथा 'एकान्त संगीत' 'बच्चन' की सम्भवत: सर्वोत्कृष्ट काव्योपलब्धि हैं। वैयक्तिक, व्यावहारिक जीवन में सुधार हुआ। अच्छी नौकरी मिली, 'नीड़ का निर्माण फिर' से करने की प्रेरणा और निमित्त की प्राप्ति हुई। 'बच्चन' ने अपने जीवन के इस नये मोड़ पर फिर आत्म–साक्षात्कार किया, मन को समझाते हुए पूछा, "जो बसे हैं, वे उजड़ते हैं, प्रकृति के जड़ नियम से, पर किसी उजड़े हुए को फिर से बसाना कब मना है?'

- परम निर्मल मन से 'बच्चन' ने स्वीकार किया है कि

"है चिता की राख कर में, माँगती सिन्दूर दुनियाँ"– व्यक्तिगत दुनिया का इतना सफल, सहज साधारणीकरण दुर्लभ है।

लोकप्रियता

'बच्चन' की कविता की लोकप्रियता का प्रधान कारण उसकी सहजता और संवेदनशील सरलता है और यह सहजता और सरल संवेदना उसकी अनुभूतिमूलक सत्यता के कारण उपलब्ध हो सकी। 'बच्चन' ने आगे चलकर जो भी किया हो, आरम्भ में उन्होंने केवल आत्मानुभूति, आत्मसाक्षात्कार और आत्माभिव्यक्ति के बल पर काव्य की रचना की। कवि के अहं की स्फीति ही काव्य की असाधारणता और व्यापकता बन गई. समाज की अभावग्रस्त व्यथा, परिवेश का चमकता हुआ खोखलापन, नियति और व्यवस्था के आगे व्यक्ति की असहायता और बेबसी 'बच्चन' के लिए सहज, व्यक्तिगत अनुभूति पर आधारित काव्य विषय थे। उन्होंने साहस और सत्यता के साथ सीधी–सादी भाषा और शैली में सहज ही कल्पनाशीलता और सामान्य बिम्बों से सजा–सँवार कर अपने नये गीत हिन्दी जगत को भेंट किये। हिन्दी जगत ने उत्साह से उनका स्वागत किया।

भगवतीचरण वर्मा के साथ हरिवंश राय बच्चन और अमिताभ बच्चन

कवि ने नये सुख और सम्पन्नता के युग में प्रवेश किया। 'सतरंगिनी' (1945 ई.) और 'मिलन यामिनी' (1950 ई.) में 'बच्चन' के नये उल्लास भरे युग की सुन्दर गीतोपलब्धियाँ देखने–सुनने को मिलीं।

आत्मकेन्द्रित कवि

'बच्चन' एकान्त आत्मकेन्द्रित कवि हैं, इसी कारण उनकी वे रचनाएँ, जो सहज स्फूर्त नहीं हैं, उदाहरण के लिए 'बंगाल के काल' और महात्मा गांधी की हत्या पर लिखी कविताएँ केवल नीरस ही नहीं सर्वथा कवित्व रहित हो गई हैं। स्वानुभूति का कवि यदि अनुभूति के बिना कविता लिखता है तो उसे सफलता तभी मिल सकती है, जबकि उसकी रचना का विचार तत्त्व या शिल्प उसे सामान्य तुकबंदी से ऊपर उठा सके–और विचारतत्त्व और शिल्प 'बच्चन' के काव्य में अपेक्षाकृत क्षीण और अशक्त हैं। प्रबल काव्यानुभूति के क्षण विरल होते हैं और 'बच्चन' ने बहुत अधिक लिखा है। यह अनिवार्य था कि उनकी उत्तर काल की अधिकांश रचनाएँ अत्यन्त सामान्य कोटि की पद्यकृतियाँ होकर रह जातीं। उन्होंने काव्य के शिल्प में अनेक प्रयोग किये हैं, पर वे प्रयोग अधिकतर उर्दू कवियों के तरह–तरह की बहरों में तरह–तरह की 'ज़मीन' पर नज़्म कहने की चेष्टाओं से अधिक महत्त्व के नहीं हो पाये।

रोचक प्रसंग

उमर ख़य्याम की रुबाइयों का हरिवंशराय बच्चन द्वारा किया गया अनुवाद एक भावभूमि, एक दर्शन और एक मानवीय संवेदना का परिचय देता है। बच्चनजी ने इस अनुवाद के साथ एक महत्त्वपूर्ण लम्बी भूमिका भी लिखी थी, उसके कुछ अंश इस प्रकार से हैं–

उमर ख़य्याम के नाम से मेरी पहली जान–पहचान की एक बड़ी मज़ेदार कहानी है। उमर ख़य्याम का नाम मैंने आज से लगभग 25 बरस हुए जब जाना था, उस समय मैं वर्नाक्यूलर अपर प्राइमरी के तीसरे या चौथे दरजे में रहा हूँगा। हमारे पिताजी 'सरस्वती' मंगाया करते थे। पत्रिका के आने पर मेरा और मेरे छोटे भाई का पहला काम यह होता था कि उसे खोलकर उसकी तस्वीरों को देख डालें। उन दिनों रंगीन तस्वीर एक ही छपा करती थी, पर सादे चित्र, फ़ोटो इत्यादि कई रहते थे। तस्वीरों को देखकर हम बड़ी उत्सुकता से उस दिन की बाट देखने लगते थे, जब पिताजी और उनकी मित्र–मंडली इसे पढ़कर अलग रख दें। ऐसा होते–होते दूसरे महीने की 'सरस्वती' आने का समय आ जाता था। उन लोगों के पढ़

चुकने पर हम दोनों भाई अपनी कैंची और चाकू लेकर 'सरस्वती' के साथ इस तरह जुट जाते थे, जैसे मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थी मुर्दों के साथ। एक–एक करके सारी तस्वीरें काट लेते थे. तस्वीरें काट लेने के बाद पत्रिका का मोल हमको दो कौड़ी भी अधिक जान पड़ता। चित्रों के काटने में जल्दबाजी करने के लिए, अब तक याद है, पिताजी ने कई बार 'गोशमाली' भी की थी।

उन्हीं दिनों की बात है, किसी महीने की 'सरस्वती' में एक रंगीन चित्र छपा था–एक बूढ़े मुस्लिम की तस्वीर थी, चेहरे से शोक टपकता था; नीचे छपा था–उमर ख़य्याम। रुबाइयात के किस भाव को दिखाने के लिए यह चित्र बनाया गया था, इसके बारे में कुछ नहीं कह सकता, इस समय चित्र की कोई बात याद नहीं है, सिवा इसके कि एक बूढ़ा मुस्लिम बैठा है और उसके चेहरे पर शोक की छाया है। हम दोनों भाइयों ने चित्र को साथ–ही–साथ देखा और नीचे पढ़ा 'उमर ख़य्याम'। मेरे छोटे भाई मुझसे पूछ पड़े, "भाई, उमर ख़य्याम क्या है?" अब मुझे भी नहीं मालूम था कि उमर ख़य्याम के क्या माने हैं। लेकिन मैं बड़ा ठहरा, मुझे अधिक जानना चाहिए। जो बात उसे नहीं मालूम है, वह मुझे मालूम है, यही दिखाकर तो मैं अपने बड़े होने की धाक उस पर जमा सकता था। मैं चूकने वाला नहीं था। मेरे गुरुजी ने यह मुझे बहुत पहले सिखा रखा था कि चुप बैठने से ग़लत जवाब देना अच्छा है।

भगवतीचरण वर्मा के 75वें जन्मदिवस पर हरिवंश राय बच्चन

मैंने अपनी अक्ल दौड़ायी और चित्र देखते ही देखते बोल उठा, "देखो यह बूढ़ा कह रहा है–उमर ख़य्याम, जिसका अर्थ है 'उमर ख़त्याम', अर्थात उमर ख़तम होती है, यह सोचकर बूढ़ा अफ़सोस कर रहा है।" उन दिनों संस्कृत भी पढ़ा करता था। 'ख़य्याम' में कुछ 'क्षय' का आभास मिला होगा और उसी से कुछ ऐसा भाव मेरे मन में आया होगा। बात टली, मैंने मन में अपनी पीठ ठोंकी, हम और तस्वीरों को देखने में लग गये। पर छोटे भाई को आगे चलकर जीवन का ऐसा क्षेत्र चुनना था, जहाँ हर बात को केवल ठीक ही ठीक जानने की ज़रूरत होती है। जहाँ कल्पना, अनुमान या कयास के लिए सुई की नोक के बराबर भी जगह नहीं है। लड़कपन से ही उनकी आदत हर बात को ठीक–ठीक जानने की ओर रहा करती थी। उन्हें कुछ ऐसा आभास हुआ कि मैं बेपर उड़ा रहा हूँ। शाम को पिताजी से पूछ बैठे। पिताजी ने जो कुछ बतलाया उसे सुनकर मैं झेंप गया। मेरी झेंप को और अधिक बढ़ाने के लिए छोटे भाई बोल उठे, "पर भाई तो कहते हैं कि यह बूढ़ा कहता है कि उमर ख़तम होती है–उमर ख़य्याम यानी उमर ख़त्याम।" पिताजी पहले तो हँसे, पर फिर गम्भीर हो गये; मुझसे बोले, "तुम ठीक कहते हो, बूढ़ा सचमुच यही कहता है।" उस दिन मैंने यही समझा कि पिताजी ने मेरा मन रखने के लिए ऐसा कह दिया है, वास्तव में मेरी सूझ ग़लत थी।

उमर ख़य्याम की वह तस्वीर बहुत दिनों तक मेरे कमरे की दीवार पर टंगी रही। जिस दुनिया में न जाने कितनी सजीव तस्वीरें दो दिन चमककर ख़ाक में मिल जाती हैं, उसमें उमर ख़य्याम की निर्जीव तस्वीर कितने दिनों तक अपनी हस्ती बनाये रख सकती थी! उमर ख़य्याम की तस्वीर तो मिट गयी पर मेरे हृदय पर एक अमिट छाप छोड़ गयी। उमर ख़य्याम और उमर ख़तम होती है, यह दोनों बात मेरे मन में एक साथ जुड़ गयी। तब से जब कभी भी मैंने 'उमर ख़य्याम' का नाम सुना या लिया, मेरे हृदय में वही टुकड़ा, 'उमर ख़तम होती है' गूज उठा। यह तो मैंने बाद में जाना कि अपनी ग़लत सूझ में भी मैंने इन दो बातों में एक बिल्कुल ठीक सम्बन्ध बना लिया था।

काव्य भाषा की गरिमा

सामान्य बोलचाल की भाषा को काव्य भाषा की गरिमा

प्रदान करने का श्रेय निश्चय ही सर्वाधिक 'बच्चन' का ही है। इसके अतिरिक्त उनकी लोकप्रियता का एक कारण उनका काव्य पाठ भी रहा है। हिन्दी में कवि सम्मेलन की परम्परा को सुदृढ़ और जनप्रिय बनाने में 'बच्चन' का असाधारण योग है। इस माध्यम से वे अपने पाठकों–श्रोताओं के और भी निकट आ गये। कविता के अतिरिक्त 'बच्चन' ने कुछ समीक्षात्मक निबन्ध भी लिखे हैं, जो गम्भीर अध्ययन और सुलझे हुए विचार प्रतिपादन के लिए पठनीय हैं। उनके शेक्सपीयर के नाटकों के अनुवाद और 'जनगीता' के नाम से प्रकाशित दोहे–चौपाइयों में 'भगवद गीता' का उल्था 'बच्चन' के साहित्यिक कृतित्व के विशेषतया उल्लेखनीय या स्मरणीय अंग माने जायेंगे या नहीं, इसमें संदेह है।

सम्मान और पुरस्कार

हरिवंश राय बच्चन को उनकी कृति 'दो चट्टानें' को 1968 में हिन्दी कविता के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। उन्हें 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' तथा एफ्रो एशियाई सम्मेलन के 'कमल पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। बिड़ला फाउन्डेशन ने उनकी आत्मकथा के लिये उन्हें सरस्वती सम्मान दिया था। 1955 में इंदौर के 'होल्कर कॉलेज' के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन ने हरिवंश राय बच्चन को कवि सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया था। हरिवंश राय बच्चन को भारत सरकार द्वारा सन् 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

प्रमुख कृतियाँ : कविता संग्रह – तेरा हार (1929), मधुशाला (1935), मधुबाला (1936), मधुकलश (1937), आत्म परिचय (1937), निशा निमंत्रण (1938), एकांत संगीत (1939), आकुल अंतर (1943), सतरंगिनी (1945), हलाहल (1946), बंगाल का काल (1946), खादी के फूल (1948), सूत की माला (1948), मिलन यामिनी (1950), प्रणय पत्रिका (1955), धार के इधर–उधर (1957), आरती और अंगारे (1958), बुद्ध और नाचघर (1958), त्रिभंगिमा (1961), चार खेमे चौंसठ खूंटे (1962), दो चट्टानें (1965), बहुत दिन बीते (1967), कटती प्रतिमाओं की आवाज़ (1968), उभरते प्रतिमानों के रूप (1969), जाल समेटा (1973), नई से नई–पुरानी से पुरानी (1985). **आत्मकथा** – क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969), नीड़ का निर्माण फिर (1970), बसेरे से दूर (1977), दशद्वार से सोपान तक (1985), प्रवास की डायरी. **विविध** – बच्चन के साथ क्षण भर (1934), खय्याम की मधुशाला (1938), सोपान (1953), मैकबेथ (1957), जनगीता (1958), ओथेलो (1959), उमर खय्याम की रुबाइयाँ (1959), कवियों में सौम्य संत: पंत (1960), आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि: सुमित्रानंदन पंत (1960), आधुनिक कवि (1961), नेहरू: राजनैतिक जीवनचरित (1961), नये पुराने झरोखे (1962), अभिनव सोपान (1964), चौंसठ रूसी कविताएँ (1964), नागर गीता (1966), बच्चन के लोकप्रिय गीत (1967), डब्लू बी यीट्स एंड अकल्टिज़्म (1968), मरकत द्वीप का स्वर (1968), हैमलेट (1969), भाषा अपनी भाव पराये (1970), पंत के सौ पत्र (1970). प्रवास की डायरी (1971), किंग लियर (1972), टूटी छूटी कड़ियाँ (1973)।

बच्चन जी से संबंधित पुस्तकें

हरिवंश राय बच्चन पर अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं। इनमें उनपर हुए शोध, आलोचना एवं रचनावली शामिल हैं। बच्चन रचनावली (1983) के नौ खण्ड हैं। इसका संपादन अजितकुमार ने किया है। अन्य उल्लेखनीय पुस्तकें हैं– हरिवंशराय बच्चन (बिशन टण्डन) गुरुवर बच्चन से दूर (अजितकुमार)।

मृत्यु

2002 के सर्दियों के महीने से उनका स्वस्थ्य बिगड़ने लगा। 2003 के जनवरी से उनको सांस लेने में दिक्कत होने लगी। कठिनाइयां बढ़ने के कारण उनकी मृत्यु 18 जनवरी 2003 में सांस की बीमारी के वजह से मुंबई में हो गयी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फ़ैज़ाबाद – सदस्य कार्यालयों की सूची

सन्योजक : बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

क्र. सं.	सदस्य कार्यालय/ विद्यालय का नाम	कार्यालय/विद्यालय प्रमुख का नाम, पदनाम व संपर्क विवरण	राजभाषा प्रभारी/संपर्क अधिकारी का नाम, पदनाम व संपर्क विवरण
केंद्र सरकार के अधीनस्थ कार्यालय एवं विद्यालय			
1.	**आकाशवाणी** कार्यालय, अयोध्या	**श्री राम मूर्ति मिश्रा** निदेशक (अभियांत्रिकी) faizabad@air.org.in +91 94151 16395	**श्री संजयधर द्विवेदी** कार्यक्रम अधिशासी airfzd@rediffmail.com +91 94522 88600
2.	**केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल** कमाण्डेंट कार्यालय, 63 वाहिनी, अयोध्या	**श्री छोटे लाल** कमाण्डेंट (कमांडिंग ऑफिसर) co63bn@crpf.gov.in +91 94509 16404	**श्री एस. एन. पांडेय** ए. एस. आई. co63bn@crpf.gov.in +91 88661 49558
3.	**केन्द्रीय विद्यालय** फैज़ाबाद कैंट अयोध्या	**श्री अमित श्रीवास्तव** प्राचार्य kafaizabad@yahoo.co.in +91 94738 98869	**श्री रजत कुमार** पी. जी. टी, हिंदी kafaizabad@yahoo.co.in +91 98897 30152
4.	**छावनी परिषद, कार्यालय** फ़ैज़ाबाद छावनी, अयोध्या	**श्री यशपाल सिंह,** आई. डी. ई. एस. (मुख्य अधिशासी अधिकारी) cbfaizabad@digest.org +91 9839044960	**श्री संतोष कुमार चटर्जी** राजभाषा प्रतिनिधि cbfaizabad@digest.org +91 6388588780
5.	**जवाहर नवोदय विद्यालय** डाभासेमर, अयोध्या	**श्री कृष्ण कुमार मिश्रा** प्राचार्य jnvfaizabad@gmail.com +91 95328 84651	**श्री मयंक तिवारी** पी.जी.टी. हिंदी jnvfaizabad@gmail.com +91 95328 84651
6.	**भारत संचार निगम लिमि** कार्यालय–महाप्रबंधक दूरसंचार अयोध्या	**श्री प्रभांश यादव** महाप्रबंधक gmtdfy@bsnl.co.in +91 94152 22217	**श्री जगन्नाथ तिवारी** कनिष्ठ हिंदी अनुवादक Jntbsnl@gmail.com +91 94545 87238
7.	**भारतीय खाद्य निगम** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	**श्री महेंद्र सिंह** मण्डल प्रबंधक faizaup.fci@gov.in +91 90765 00141	**श्री संजीव कुमार** प्रबंधक (हिंदी) faizaup.fci@gov.in +91 99195 19557

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फ़ैज़ाबाद – सदस्य कार्यालयों की सूची

8.	**भारतीय डाक** कार्यालय प्रवर अधीक्षक अयोध्या मण्डल, अयोध्या	**श्री पी. के. सिंह** प्रवर अधीक्षक–डाकघर dofaizabad.up@indiapost.gov.in +91 9415688850	**श्री पंकज कुमार सिंह** संपर्क अधिकारी dofaizabad.up@indiapost.gov.in +91 8115787140
9.	**राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय** क्षेत्र संकार्य प्रभाग उप क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या	**श्री पवन कुमार गुप्ता** वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी fodsro.fzd@gmail.com +91 63881 49407	**श्री ध्रुव पाण्डेय** कनिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी fodsro.fzd@gmail.com +91 88961 72236
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक एवं बीमा कंपनियाँ (प्रशासनिक कार्यालय)			
10.	**दि न्यू इंडिया एश्योरेंश कं. लिमि** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	**श्री गुलशन वर्मा** मंडल प्रबंधक gulshan.verma@newindia.co.in +91 90331 60656	**श्री ओ.पी. सिंह** संपर्क अधिकारी (राजभाषा) singh.om@newindia.co.in +91 75308 00686
11.	**पंजाब नैशनल बैंक** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	**श्री के. एल. बैरवा** मंडल प्रमुख cofzd@pnb.co.in +91 90040 35058	**श्री सुनील कुमार पटेल**, प्रबंधक (राजभाषा) cofzrajbhasha@pnb.co.in / cofzdraj@pnb.co.in +91 80091 19900
12.	**बैंक ऑफ़ बड़ौदा** क्षेत्रीय कार्यालय–अम्बेडकरनगर	**श्री अरविन्द कुमार पांडेय**, क्षेत्रीय प्रमुख rm.ambedkarnagar@bank ofbaroda.co.in +91 63891 47000	**श्री नीरज कुमार सिंह**, प्रबंधक (राजभाषा) rajbhasha.ambedkarnagar@bank ofbaroda.co.in +91 95549 68319
13.	**बैंक ऑफ़ बड़ौदा** क्षेत्रीय कार्यालय–अयोध्या	**श्री अनिल कुमार झा**, अध्यक्ष नराकास–फैज़ाबाद एवं क्षेत्रीय प्रमुख rm.faizabad@bankofbaroda.co.in +91 95549 68300	**श्री नीरज कुमार सिंह**, सदस्य सचिव, नराकास–फैज़ाबाद एवं प्रबंधक (राजभाषा) rajbhasha.faizabad@bankofbaroda.co.in +91 95549 68319
14.	**भारतीय जीवन बीमा निगम** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	**श्री चंद्र सिंह दासपा** वरिष्ठ मंडल प्रबंधक sdm.faizabad@licindia.com +91 98911 44890	**श्री अजय कुमार श्रीवास्तव** प्रशासनिक अधिकारी pir.faizabad@licindia.com +91 94157 19476
15.	**भारतीय स्टेट बैंक** क्षेत्रीय व्यवसाय कार्यालय, अयोध्या	**श्री संजीव यादव** क्षेत्रीय प्रमुख sbi.63211@sbi.co.in –––	**श्री ए. आर. सागर** प्रबंधक sagar.2512@sbi.co.in +91 99187 51593
16.	**यूको बैंक** अंचल कार्यालय, अयोध्या	**श्री अमित भारद्वाज** सहायक महाप्रबंधक zo.ayodhya@ucobank.co.in +91 81300 36492	**श्री मनोज कुमार सिंह** वरिष्ठ प्रबंधक zoayodhya.hrm@ucobank.co.in +91 70035 58561
17.	**यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंश कं.लिमि** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	**श्री आशीष कुमार शुक्ला** वरिष्ठ मंडल प्रबंधक ashishshukla@uiic.co.in +91 98397 00828	**श्री डी.के. सिंह** एएमडी dilipkrsingh@uiic.co.in +91 94150 48183

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फ़ैज़ाबाद – सदस्य कार्यालयों की सूची

18.	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या	श्री हिमांशु मिश्र क्षेत्र प्रमुख rhayodhya@unionbankofindia.com +91 99870 08677	श्री रतन कुमार सिंह वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) rajbhasha.roayodhya@unionbankofindia.bank +91 70084 07571
19.	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या	श्री सुरेश कुमार सिंह क्षेत्रीय प्रमुख rmayodro@centralbank.co.in +91 83037 14301	श्री सुरेन्द्र सिंह यादव प्रबंधक (राजभाषा) hindiayodro@centralbank.co.in +91 83037 14296
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक एवं बीमा कंपनियाँ (शाखा कार्यालय)			
20.	आई डी बी आई बैंक लिमि मुख्य शाखा	श्री सरदेंदु विमल सिंह शाखा प्रबंधक ibkl0000398@idbi.co.in +91 96194 86077	सुश्री गरिमा श्रीवास्तव संपर्क अधिकारी ibkl0000398@idbi.co.in +91 70075 92627
21.	इंडियन ओवरसीज़ बैंक मुख्य शाखा	श्री चंदन दुबे शाखा प्रमुख iob.1429@iob.in +91 99185 66445	श्री संकेत श्रीवास्तव अधिकारी iob.1429@iob.in +91 88381 95586
22.	इंडियन बैंक मुख्य शाखा	श्री सतीश चंद्र पाठक वरिष्ठ शाखा प्रबंधक faizabad@indianbank.co.in +91 88811 18099	श्री शेखर श्रीवास्तव वरिष्ठ प्रबंधक faizabad@indianbank.co.in +91 94530 35090
23.	केनरा बैंक मुख्य शाखा	श्री सौरभ शुक्ल वरिष्ठ प्रबंधक cb1641@canarabank.com +91 81730 07727	श्री शशिकांत प्रबंधक (राजभाषा) olcoluck@canarabank.com +91 91302 52061
24.	नेशनल इंश्योरेंश कं. लिमि शाखा कार्यालय	श्री राम राज वरिष्ठ शाखा प्रबंधक ram.raj@nic.co.in +91 94519 04441	श्री धर्मेंद्र कुमार प्रशासनिक अधिकारी 450305@nic.co.in +91 94528 38077
25.	पंजाब एंड सिंध बैंक मुख्य शाखा	श्री सुनिल कुमार पांडे शाखा प्रबंधक f1375@psb.co.in +91 81275 26708	
26.	बैंक ऑफ इंडिया मुख्य शाखा	श्री संतोष यादव मुख्य प्रबंधक faizabad.varanasi@bankofindia.co.in +91 87006 46477	श्री अशोक कुमार प्रबंधक faizabad.varanasi@bankofindia.co.in +91 95910 31824
27.	बैंक ऑफ महाराष्ट्र मुख्य शाखा	श्री शैलेश कुमार शाखा प्रबंधक bom1704@mahabank.co.in +91 85742 34123	श्रीमती शानो द्विवेदी राजभाषा प्रभारी bom1704@mahabank.co.in +91 77068 32238

राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम

(24.04.2022)

राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम

(29.06.2022)

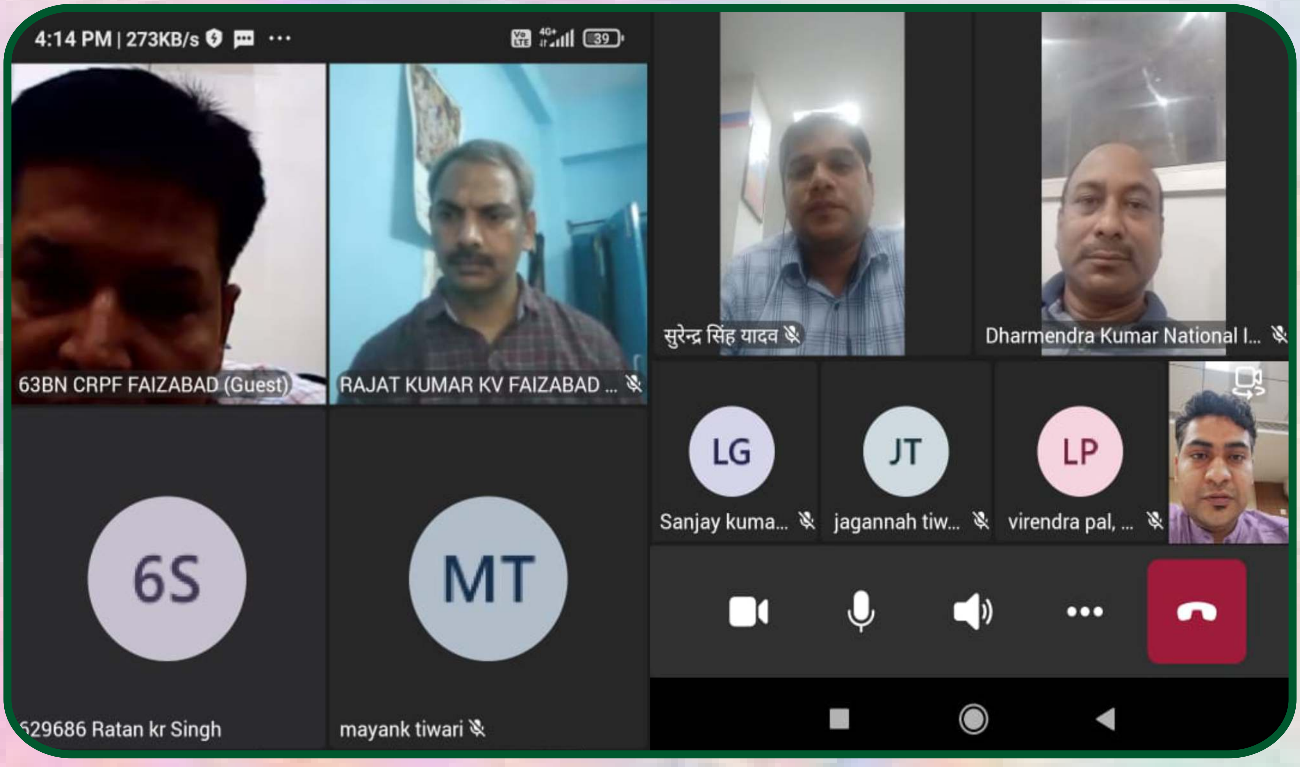

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
फैज़ाबाद

भारतीय स्टेट बैंक

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India
आन्ध्रा Andhra
कार्पोरेशन Corporation

बैंक ऑफ इंडिया

केनरा बैंक Canara Bank
सिंडिकेट Syndicate

भारतीय डाक Indian Post

बैंक ऑफ महाराष्ट्र

यूको बैंक

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

pnb
Oriental United
Together for the better

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

युनाइटेड इंडिया
UNITED INDIA

नेशनल इन्श्योरेन्स
National Insurance

IDBI BANK

THE NEW INDIA ASSURANCE CO. LTD.

एन एस एस ओ
NSSO

भारतीय खाद्य निगम
FOOD CORPORATION OF INDIA

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

छावनी परिषद्, फैजाबाद
Cantonment Board, Faizabad

बीएसएनएल
भारत को जोड़े

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

आकाशवाणी

संयोजक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA
देना DENA

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद